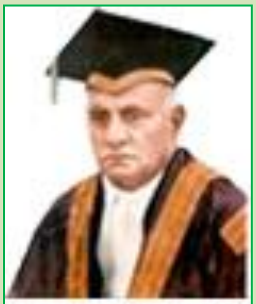

Dr. Harisingh Gour

न्यूजलेटर

अप्रैल 2025

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक

प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श

डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय

कुलसचिव (प्र.)

संपादक

डॉ. विवेक जायसवाल

जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य

डॉ. हेमंत पाटीदार

डॉ. आशुतोष

डॉ. शालिनी चोइथरानी

डॉ. संजय शर्मा

माधव चंद्रा

विकसित भारत-स्वर्णिम भारत की दिशा में मिलकर कार्य करना है- प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के गौर समिति कक्ष में 'बेहतर भविष्य की ओर' विषय पर केंद्रित संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया. संवाद कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल थे. विशिष्ट अतिथि के रूप में डीएवी विश्वविद्यालय जालंधर की पूर्व कुलसचिव डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज थीं.

कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. डॉ. गौर की प्रतिमा पर पुष्पार्चन के साथ संवाद सत्र की शुरुआत हुई. संवाद सत्र में ईएमआरसी द्वारा निर्मित केंद्रीय विश्वविद्यालय की अकादमिक यात्रा पर केंद्रित वृत्त चित्र का प्रदर्शन किया गया. इसके पश्चात् अकादमिक मामलों के निदेशक प्रो. नवीन कानगो ने विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन की रणनीतियों और क्रियान्वयन गतिविधि और उसके सकारात्मक परिणामों का प्रस्तुतीकरण दिया. शोध एवं विकास की निदेशक प्रो. श्वेता यादव ने विश्वविद्यालय के उन्नत अनुसंधान केन्द्रों का परिचय देते हुए केन्द्रों की गतिविधियों एवं अन्य अन्य नवाचारों को प्रस्तुत किया. प्रो. अनिल जैन ने विश्वविद्यालय में नैक ग्रेडिंग और राष्ट्रीय मूल्यांकन फ्रेमवर्क को लेकर की जा रही तैयारियों एवं रणनीतियों को साझा किया.

प्रो. चक्रवाल ने विश्वविद्यालय की प्रगति की सराहना करते हुए कहा कि डॉ. गौर द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय मध्य भारत का एक उत्कृष्ट अकादमिक केंद्र है जिसकी चारों ओर प्रतिष्ठा है. उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय में बहुत क्षमताएं हैं. आने वाले समय में अच्छी रैंकिंग एवं अच्छी ग्रेडिंग के लिए अभी से की जा रही तैयारियां निश्चित रूप से अच्छे परिणाम देंगीं. बेहतर कल के लिए आज से की जा रही तैयारी आवश्यक है. भविष्य की रूपरेखा और योजना न केवल संस्थान बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए भी एक दिशा तय करती है. विद्यार्थी आत्मनिर्भर बनें, अध्ययनरत विद्यार्थी भी काम सीखने और करने के साथ कैसे पढ़ाई जारी रख सकें इसके लिए सभी संस्थानों को प्रयास करना चाहिए. रैंकिंग के लिए उन्होंने कई नीतिगत सुधारों की भी चर्चा की और कहा कि हमें हर

कॉर्नर पर तैयारी रखनी चाहिए. हमारा प्रत्येक आयाम मजबूत होगा तो हम रैंकिंग में किसी भी आयाम से पीछे नहीं रहेंगे. उन्होंने आउटकम बेस्ड लर्निंग, सर्वसमावेशी शिक्षा, स्व-अर्जन, अनुभव जनित शिक्षा जैसे मुद्दों पर अपनी बात विस्तारपूर्वक रखी.

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि बेहतर भविष्य के लिए हमें आज से ही कार्य करना होगा. एक बेहतर कल तभी स्वर्णिम होगा जब आज हम जागृत रहें और भविष्य के लिए एक मजबूत रूपरेखा पर कार्य करें. उन्होंने कहा कि दोनों विश्वविद्यालय मिलकर अकादमिक एवं शोध साझेदारी की दिशा में कार्य कर सकते हैं. उन्होंने आशा व्यक्त की कि अकादमिक और शोध संसाधनों की संयुक्त साझेदारी से हम स्वर्णिम भविष्य की दिशा में कदम रख सकते हैं. उन्होंने कहा कि भारत सरकार की वर्तमान नीतियों पर अमल करते हुए हमें विकसित भारत-स्वर्णिम भारत की दिशा में मिलकर कार्य करना है. अच्छे परिणाम के लिए अच्छी रणनीति और संयुक्त प्रयास किसी भी संस्थान को सर्वोत्कृष्ट बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. हमें इसी मार्ग का अनुसरण करते हुए विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य करते रहना है. संवाद सत्र में उपस्थित संकाय सदस्यों एवं अधिकारियों ने भी विश्वविद्यालय की प्रगति को लेकर की जारी रूपरेखा और तैयारियों से सदन को अवगत कराया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. दिनेश नेमा, निदेशक फैकल्टी अफेयर्स प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. रणवीर सिंह, प्रो. चंदा बेन, प्रो. देवाशीष बोस, प्रो. वर्षा शर्मा, प्रो. के.के.एन. शर्मा, प्रो. आरके गंगेले, प्रो. वंदना सोनी, प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. विनोद भारद्वाज, डॉ. मोहन टी. ए., डॉ. अभिषेक बंसल, डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. गौतम प्रसाद, डॉ. विवेक जायसवाल सहित विभिन्न संकायाध्यक्ष, अधिकारी और प्रभारी उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय के वैली कैंपस में भव्य प्रवेश द्वार बनेगा, कुलपति ने किया भूमि पूजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के वैली कैंपस में भव्य प्रवेश द्वारा बनेगा. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भूमि पूजन कर प्रवेश द्वार निर्माण कार्य का शुभारम्भ किया. गौरतलब है कि ग्राम पथरिया जाट स्थित वैली कैंपस में विश्वविद्यालय के विभिन्न अकादमिक भवनों का निर्माण कर परिसर को विस्तारित किया जा रहा है. इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विद्यार्थियों, भवनों एवं परिसर की सुरक्षा की दृष्टि से प्रवेश द्वार का निर्माण काफी समय से प्रतीक्षित था. जिसका कार्य अब शुरू हो जाएगा और शीघ्र ही भव्य प्रवेश द्वार बनकर तैयार होगा. उन्होंने कहा कि निकट भविष्य में वैली परिसर में कई अन्य नवीन अकादमिक भवनों, कन्वेंशन सेंटर, छात्रावास इत्यादि का निर्माण प्रस्तावित है. औपचारिक स्वीकृति के बाद परिसर को और अधिक विस्तारित किया जाएगा. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में कई नवीन पाठ्यक्रमों के संचालन और कई नई

इकाईयों और प्रकोष्ठों के स्थापित होने, विद्यार्थियों को आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ अध्ययन-अध्यापन इत्यादि उद्देश्य से परिसर का विस्तार आवश्यक है. उन्होंने नेपाल पैलेस परिसर में नवीन वाटर टैंक निर्माण की भी आधार शिला रखी.

कुलपति ने नवनिर्मित भवनों का किया निरीक्षण, विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध होंगे नए भवन एवं लैब

विश्वविद्यालय में नवनिर्मित अंग्रेजी विभाग के विस्तारित भवन, एकीकृत विज्ञान प्रयोगशाला, फार्मेसी विभाग के विस्तारित भवन के निरीक्षण के साथ ही संचार एवं पत्रकारिता, स्वदेशी ज्ञान अध्ययन केंद्र एवं पर्यावरण विज्ञान के नवीन

भवन का निरीक्षण किया और प्रगति की समीक्षा की. ये सभी भवन बनकर तैयार हैं. फर्नीचर एवं तकनीकी उपलब्धता कार्य प्रगति पर हैं और ये सभी भवन बहुत जल्द ही विद्यार्थियों के उपयोग में आने लगेंगे. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. डी. के. नेमा, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी. उपाध्याय, सुरक्षा अधिकारी प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. रणवीर कुमार, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. के के एन शर्मा, प्रो. यू के पाटिल, प्रो. एम एल खान, प्रो. कालीनाथ झा, डॉ. अभिषेक बंसल, समर्थ दीक्षित, इंजी. राहुल गोस्वामी, सुहैल कुरैशी, निधि जैन, सीपीडब्ल्यूडी के इंजीनियर, अधिकारी एवं यंत्री विभाग के कर्मचारी उपस्थित थे.

'राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन:विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में' विषय पर हिन्दी कार्यशाला सम्पन्न

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजभाषा प्रकोष्ठ में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

करता है. इस अनुक्रम में 28 फरवरी, 2025 को विश्वविद्यालय अतिथि गृह में विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों हेतु 'राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन : विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में' विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई. कार्यशाला के विषय-विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के शिक्षा अधिकारी डॉ. अमित कुमार वर्मा ने उपस्थित अधिकारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं विश्वविद्यालयों में उसके सफल कार्यान्वयन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा का समुचित उपयोग तभी सम्भव है जब हम हिन्दी प्रयोग को लेकर अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त हो जाते हैं. उन्होंने बताया कि हिन्दी प्रयोग की धारा का प्रवाह ऊर्ध्व से सतह की ओर होता है. जब हमारे अधिकारीगण सहज-भाव से अपने कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करते हैं तो अधीनस्थ कार्मिक स्वत: ही

हिन्दी में कार्य के लिए प्रेरित होते हैं। उन्होंने बताया कि प्रौद्योगिकी एवं भाषा ज्ञान के मेल से राजभाषा प्रयोग को सहज बनाया जा सकता है। इस दिशा में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा ई-शब्दकोश, अनुवाद एवं टाइपिंग टूल्स विकसित किए जा रहे हैं, जिसका कार्यालयीन कामकाज में उनका भी भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए.

विश्वविद्यालय के संयुक्त कुलसचिव एवं राजभाषा अधिकारी श्री संतोष सोहगौरा ने नीतियों के अनुपालन में प्रशासनिक एवं नियंत्रण अधिकारियों की भूमिका पर अपनी बात रखते हुए कहा कि डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय हिन्दी भाषी क्षेत्र 'क' में स्थित है और विश्वविद्यालय के 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारी हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं, ऐसे में संबंधित अनुभागों एवं कार्यालयों में हिन्दी में कामकाज सुनिश्चित करना हम सभी का उत्तरदायित्व है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं अन्य शीर्षस्थ अधिकारीगण प्रस्तुत नस्तियों एवं आदेशों पर हिन्दी में ही हस्ताक्षर एवं अनुमोदन करते हैं। हम सभी अधिकारियों को इससे प्रेरित होकर अपना दैनन्दिन कार्यालयीन कामकाज हिन्दी में करना सुनिश्चित करना चाहिए.

कार्यशाला में विषय-विशेषज्ञ डॉ. अमित कुमार वर्मा ने प्रतिभागी अधिकारियों की राजभाषा एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से संबंधित जिज्ञासाओं का भी समाधान किया। कार्यशाला में पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मोहन टी.ए., सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. मुकेश साहू एवं डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, सहायक कुलसचिव श्री राजकुमार पाल, श्री दीपक कुमार शाक्य, श्रीमती ए.लक्ष्मी एवं श्री आशीष कुमार तिवारी, सूचना प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ से डॉ. रूपेन्द्र कुमार चौरसिया एवं श्री सचिन सिंह गौतम, चिकित्सा अधिकारी डॉ. किरण माहेश्वरी एवं डॉ. भूपेन्द्र पटेल, सहायक अभियंता श्री राहुल गिरी गोस्वामी, अनुभाग अधिकारी डॉ. उदय श्रीवास्तव एवं डॉ. अशोक सैनी तथा राजभाषा प्रकोष्ठ से हिन्दी अनुवादक अभिषक सक्सेना एवं उच्च श्रेणी लिपिक श्री विनोद रजक आदि उपस्थित रहे। कार्याशाला का संयोजन एवं संचालन संयुक्त कुलसचिव एवं राजभाषा अधिकारी श्री संतोष सोहगौरा ने किया.

विश्वविद्यालय: डॉ. साक्षी सोनी को मिला युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के भैषजिक विज्ञान विभाग की पूर्व शोधार्थी डॉ. साक्षी सोनी को प्रतिष्ठित युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. यह सम्मान उन्हें विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में 27 से 29 मार्च 2025 तक आयोजित 40वीं युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में प्रदान किया गया. वर्तमान में डॉ. साक्षी सोनी राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (NIPER), अहमदाबाद में अनुसंधान सहयोगी के रूप में कार्यरत हैं. उन्होंने अपनी पीएच.डी. विश्वविद्यालय के भैषजिक विज्ञान विभाग से पूर्ण की है. उन्हें यह पुरस्कार उनके शोध विषय "टार्गेटेड डिलीवरी ऑफ डॉक्सोरूबिसिन टू ब्रेस्ट कैंसर सेल्स यूज़िंग सीपीपी-कंजुगेटेड लिपोसोम्स" पर उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रदान किया गया. इस अवसर पर विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के

कुलपति तथा म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (MPCST), भोपाल के महानिदेशक ने उन्हें सम्मानित किया. डॉ. साक्षी का यह शोध कार्य प्रो. वंदना सोनी एवं प्रो. सुशील के. कशाव के निर्देशन में सम्पन्न हुआ. इस सम्मानजनक उपलब्धि पर उन्होंने आभार व्यक्त करते हुए इसका श्रेय विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, विभाग के समस्त शिक्षकों तथा अपने माता-पिता श्रीमती कांता सोनी और श्री कृष्ण सोनी को दिया.

सागर रंग महोत्सव में कलाकारों ने की ‘इश्कियापा’ एवं ‘जानेमन’ की नाट्य प्रस्तुति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के सांस्कृतिक परिषद और युगसृष्टि थियेटर ग्रुप, सागर के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला विभाग में 27 मार्च से 3 अप्रैल तक चल रहे आठ दिवसीय ‘प्रथम सागर रंग

महोत्सव 2025’ में 'इश्कियापा' एवं ‘जानेमन’ की नाट्य की प्रस्तुति हुई.

'इश्कियापा' की कहानी मूल रूप से एक स्टूडियो पर आधारित है जिसमें कुछ लोग एक छोटे शहर में मुम्बई से फिल्म बनाने आते हैं. वे छोटे शहर के अमीर लोगों को फिल्म के जाल में फंसा लेते हैं. जब इनका पर्दाफाश होता है उन्हें फिल्म को किसी भी हालत में पूरा करने के लिए स्टूडियों मे हड़बड़ी मच जाती है कि फिल की कोई कहानी तो है नही. कहानी न होने के चक्कर में एक दूसरे को कहानी बनाने को कहा जाता है और अंत में फिल्म बन कर तैयार हो जाती है. ये कथा मूल रूप से एक प्रेम कथा और 50 एवं 60 के दशक के समय और तत्कालीन हिन्दी फिल्मी पृष्ठभूमि पर आधारित है. इस नाट्य प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने वाले कलाकारों में मंच पर निर्देशक- प्रवीण केम्या, कैमरामैन-अप्रतिम मिश्रा, नदीम कादिर - अर्पित दुबे, स्पॉट बाय- सुदीप नेमा, चंदू - देव वृषभ अहिरवार, आशा- सोनाली सेन, सहेली, यश्विनी गौड़, सहेली-प्रिया गोस्वामी, सहेली-सिया चौवे, रिसेप्शनिस्ट-सिया चौबे, गुंडा-महिमा प्यासी, काऊबॉय-सागर सिंह ठाकुर, बोस-अश्विनी साहू, गुंडा-कृष्णा देवलिया,

मधु- रितिका सेन, सूदन-अमन ठाकुर, मन-शुभम पटेल, प्रोड्यूसर मैम-सिमरन जैन, पानवाल-आयुष पुराणी, प्रेमी-संजू आठिया, प्रेमिका-महिमा प्यासी, लड़का-राहुल चौरसिया, साला-अश्विनी साहू, प्रस्तुति प्रबंधक-विश्वराज, सह-निर्देशक प्रवीण केम्या, मंच प्रबंधक -आनंद, दीपेद्र, अश्विनी, प्रकाश परिकल्पना-संजय, प्रकाश सहयोग-आयुषी, निशु, संगीत संचालन-आनंद, संगीत संयोजन-शुभम पटेल,अतुल पथरोल, हिमांशू तिवारी, अंशूल आठिया, वाद्यवादन-निक्की अहिरवार, राहुल चौरसिया, बालमुकुंद पटेल आदि.

मच्छिन्द्र मोरे द्वारा लिखित **जानेमन** किन्नर समाज के संघर्ष, प्रेम और स्वीकृति की कहानी है. यह उपेक्षित किन्नर समुदाय के वास्तविक जीवन और उनकी भावनात्मक जटिलताओं को उजागर करता है. यह कथा किन्नर समाज की इच्छाओं, सपनों और समाज की बंदिशों के बीच की टकराहट को सामने लाती है. नाटक में परिवार, पहचान, प्रेम और आत्मसम्मान की खोज को संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है. समाज की कठोर सच्चाइयों के बीच किन्नर समुदाय की गरिमा और आत्मसम्मान की लड़ाई इसका केंद्र है जो सोचने पर मजबूर करता है कि क्या मानवता के मूलभूत अधिकार सभी के लिए समान हैं? नाटक का निर्देशन सहायक प्राध्यापक अल्ताफ मुलानी ने किया.

इस नाट्य प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने वाले कलाकारों में मंच पर नज्जो-आनंद अग्रवाल, पन्ना - शुभम पटेल, रेखा-रितिका सेन, शकीला - सिमरन जैन, माया - सागर ठाकुर, जूली-दीपेंद्र लोधी, सलमा - अमन ठाकुर, बसंती - अर्पित दुबे, मुकेश/ नगीना - कृष्णा देवलिया, गुलाबो - यश्विनी गौड़, सुरेश - संजय कोरी, पंडित - प्रवीण केम्या, फिरोज़ - प्रिंस चौरसिया, पठान - अखिलेश तिवारी, शीला - नितिन गौंड, रेशमा - संजू आठिया, मामा - निक्की अहिरवार, राहुल चौरसिया, चंपा नायक - अप्रतिम मिश्रा, लता - देव वृष अहिरवार, मंच परिकल्पना आनंद अग्रवाल, संजय कोरी, दीपेंद्र लोधी एवं प्रकाश परिकल्पना में विवेकानंद सोनी तथा संगीत निर्देशक में यश गोपाल व गायन में यश हिमांश साक्षी, संजय, पंकज, विधान आदि ने सहभगिता की.

ईएमएमआरसी द्वारा निर्मित फिल्म 'संचार के सिद्धांत' ने जीता अखिल भारतीय पुरस्कार

डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के शैक्षिक मीडिया अनुसंधान केंद्र (ईएमएमआरसी) के द्वारा निर्मित फिल्म 'संचार के सिद्धांत' को 'बेस्ट स्क्रिप्ट राइटिंग अवार्ड' से सम्मानित किया गया। गौरतलब है कि अखिल भारतीय बाल

शैक्षिक ई-कंटेंट प्रतियोगिता 2024-25 का तीन दिवसीय कार्यक्रम 26 से 28 मार्च तक उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एनसीईआरटी, उमियाम, मेघालय में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में अखिल भारतीय स्तर पर 800 से अधिक ऑडियो-वीडियो कार्यक्रमों में से चयनित उत्कृष्ट कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया, जिसके पश्चात विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। विश्वविद्यालय के ईएमआरसी केंद्र की ओर से इस आयोजन में फिल्म के निर्माता, प्रोडक्शन असिस्टेंट धीरज सनमोरिया ने कार्यक्रम में भाग लिया. सीआईईटी, एनसीईआरटी के संयुक्त निदेशक प्रोफेसर अमरेंद्र बेहरा ने प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं ट्रॉफी प्रदान किया.

इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने हर्ष व्यक्त करते हुए ईएमएमआरसी विभाग की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह पुरस्कार विभाग के समर्पण और रचनात्मकता का प्रमाण है। वहीं, ईएमएमआरसी के केंद्र निदेशक डॉक्टर पंकज तिवारी ने भी इस उपलब्धि पर समस्त स्टाफ को बधाई दी और इसे टीम वर्क का शानदार उदाहरण बताया। केंद्र निदेशक डॉ. पंकज तिवारी के मार्गदर्शन में तैयार यह कार्यक्रम 'संचार के सिद्धांत' जनसंपर्क और पत्रकारिता के छात्रों के लिए विशेष रूप से बनाया गया है। इसकी स्क्रिप्ट राइटिंग, निर्देशन, संपादन और प्रस्तुतिकरण का कार्य धीरज सनमोरिया ने किया है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग के छात्र विवेकानंद सोनी और आकाश श्रीवास्तव ने अभिनय से योगदान दिया। फिल्म के निर्माण में कैमरा संचालन श्री शिवकांत सिंह ने किया, जबकि निर्माण

सहयोग श्री माधव चंद्रा, इंजीनियर श्री सुनील कुमार, राकेश ठाकुर, राजेंद्र विश्वकर्मा, विक्रमजीत वैद्य, भरतेश जैन, महबूब खान, मोहित सैनी, सुरेश आसके, चंद्रेश गौहर, अनंतराम साहू और कोमल प्रसाद ने प्रदान किया। इस प्रतियोगिता के लिए ईएमएमआरसी, सागर ने कुल चार प्रविष्टियाँ भेजी थीं। इनमें 'संचार के सिद्धांत' के अलावा गुलज़ार के जीवन पर आधारित 'ज़ज़्बात का चितेरा: गुलज़ार', स्टूडियो आधारित क्लास लेक्चर 'मारे गए गुलफाम और फिल्म तीसरी कसम', और एक वीडियो परिचर्चा 'द गुड सेमेटेरियन' शामिल थीं। इन सभी प्रविष्टियों ने विभाग की बहुमुखी प्रतिभा को प्रदर्शित किया। यह पुरस्कार न केवल ईएमएमआरसी, सागर के लिए गर्व का क्षण है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि शैक्षिक सामग्री के क्षेत्र में विश्वविद्यालय किस तरह नवाचार और उत्कृष्टता की ओर बढ़ रहा है। कुलपति और केंद्र निदेशक ने इस सफलता को भविष्य में और बेहतर कार्य करने की प्रेरणा बताया।

मनोविज्ञान विभाग में अंतरराष्ट्रीय ऑटिज्म जागरूकता दिवस मनाया गया

डॉक्टर हरीसिंह ग़ौर विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में 2 अप्रैल 2025 को अंतरराष्ट्रीय ऑटिज्म जागरूकता दिवस मनाया गया. आयोजन का उद्देश्य समाज में ऑटिज़्म के प्रति जागरूकता बढ़ाना था. ऑटिज़्म मानव मस्तिष्क से जुड़ा

हुआ विकार है, जो व्यक्ति को सामाजिक व्यवहार, संचार क्षमता और दोहराव वाली गतिविधियों को प्रभावित करता है. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अधिष्ठाता मानविकी एवं सामाजिक संकाय, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि, ऑटिज़्म के लक्षण बचपन में ही दिखने लगते हैं लेकिन यह हर व्यक्ति में अलग अलग हो सकते हैं. छात्र-छात्राओं द्वारा नुक्कड़ नाटक एवं कविताओं की प्रस्तुति देकर ऑटिज़्म के प्रति जागरूकता का संदेश दिया गया. डायरेक्टरेट ऑफ़ एजुकेशन, दिल्ली से श्रीमती प्रवीन कुमारी, स्पेशल एजुकेटर ने ऑनलाइन जुड़कर ऑटिज़्म से जुड़े व्यावहारिक ज्ञान तथा अनुभव को छात्र - छात्राओं के साथ साझा किया. उन्होंने ऑटिज्म के लक्षण, कारणों एवं इलाज के बारे में विस्तार से अपने व्याख्यान में चर्चा की. कार्यक्रम में उपस्थित डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल से पुष्पेंद्र बल्लियां एवं डॉ. वशिष्ट सेलवन द्वारा मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग को ऑटिज़्म के बढ़ते आंकड़ों का एक कारण बताया गया. कार्यक्रम में मनोविज्ञान विभाग के डॉ. ज्ञानेश तिवारी, डॉ. दिव्या भनोट, डॉ. शारदा विश्वकर्मा, डॉ. देवकी नंदन शर्मा एवं शोधार्थी अर्चना चौधरी, अनुराग शुक्ला और अमित मार्केरिया, साथ में एम. ए./एम. एस सी. द्वितीय और चतुर्थ वर्ष के छात्र-छात्राओं की भी सहभागिता रही. कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक संचिता मीना, सहायक प्राध्यापिका द्वारा किया गया. विभागाध्यक्ष प्रो. उत्सव आनंद ने उत्कृष्ट आयोजन करने के लिए विभाग के सभी शिक्षकों, शोधार्थियों और छात्रों का आभार व्यक्त किया.

दिव्यांग विद्यार्थियों की दिव्यता राष्ट्र की अनमोल धरोहर है- प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों प्रकोष्ठ (एस.ई.डी.जी.सेल) की ओर से विश्वविद्यालय में अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली योजनाओं से अवगत

कराया गया. इस योजना के तहत विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग में अध्ययनरत विद्यार्थी विष्णु प्रसाद डांगी को जिला दिव्यांग पुर्नवास केन्द्र सागर द्वारा ट्राइसाइकिल प्राप्त हुई. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विद्यार्थी को स्वयं ट्राइसाइकिल में बिठाकर हरी झंडी दिखाते हुए रवाना किया.

इस अवसर पर कुलपति ने अपने उद्बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय में पढने वाले दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए लगातार तमाम सुविधाएं मुहैया कराई जा रही हैं. कुलपति ने प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि सरकार द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा प्रदान की जाने वाली जितनी भी सहायक सामग्री उपलब्ध कराई जाती है उन्हें विश्वविद्यालय में पढने वाले दिव्यांग विद्यार्थियों को उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु हर संभव सहयोग एवं कार्रवाई की जाए. उन्होंने अगले चरण में भी ऐसे दिव्यांग विद्यार्थियों को सहायक सामग्री उपलब्ध कराने संबंधी दिशा-निर्देश दिए ताकि ज्यादा से ज्यादा संसाधन विद्यार्थियों को मिल सके. उन्होंने कहा कि दिव्यांग अद्भुत प्रतिभा के धनी होते हैं. इनकी

दिव्यता को यदि उचित अवसर प्रदान किया जाए तो ये राष्ट्र के लिए उपयोगी मानव शक्ति के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे. इसी उद्देश्य से विश्वविद्यालय का एस.ई.डी.जी. प्रकोष्ठ इन विद्यार्थियों के बहुआयामी पक्षों को विकसित करने के अवसर प्रदान कर रहा है. इस अवसर पर एस.ई.डी.जी. प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन, निदेशक अकादमिक गतिविधियां प्रो. नवीन कानगो, कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. मोहन टी.ए., मीडिया प्रभारी डॉ. विवेक जायसवाल एवं अन्य दिव्यांग विद्यार्थी तथा विश्वविद्यालय के पदाधिकारी उपस्थित रहे. कार्यक्रम के अंत में एस.ई.डी.जी. प्रकोष्ठ के सदस्य डॉ. नवीन सिंह द्वारा आभार व्यक्त किया.

भूविज्ञान विभाग के शोध छात्र अमन सोनी को एम.पी. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के भूविज्ञान विभाग के वरिष्ठ शोध छात्र अमन सोनी को एम.पी. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2025 पृथ्वी एवं वायुमंडलीय विज्ञान में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. यह सम्मान उन्हें विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) में 27 से 29 मार्च 2025 तक आयोजित 40वीं युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति तथा म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी), भोपाल के महानिदेशक के

द्वारा सम्मानित किया गया. उन्हें यह पुरस्कार उनके शोध विषय "बाबीना क्षेत्र, जिला झांसी, उत्तर प्रदेश के ग्रेनाइट/गनीस की भू-रासायनिक (जीओकेमिस्ट्री) और उत्पत्ति (पेट्रोजेनेसिस)" पर उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रदान किया गया. यह पुरस्कार अमन के भूविज्ञान में उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देता है. इस सम्मानजनक उपलब्धि पर उन्होंने आभार व्यक्त करते हुए इसका श्रेय विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता, अपने पर्यवेक्षक, वरिष्ठ प्रोफेसर हरेल थॉमस के समर्थन और मार्गदर्शन, विभाग के समस्त शिक्षकों तथा अपने माता-पिता श्रीमती ममता सोनी और श्री अशोक सोनी को दिया. यह पुरस्कार न केवल अमन के लिए बल्कि डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के शोध समुदाय के लिए भी एक उपलब्धि है. प्रो. हरेल थॉमस (पर्यवेक्षक), विभागीय भूविज्ञान के संकाय ने उन्हें बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं.

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालय का राजभाषा निरीक्षण सम्पन्न

कार्मिकों में राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम एवं समर्पण की सराहना

विश्वविद्यालय में राजभाषा के कार्यान्वयन की समीक्षा के लिए समय-समय पर न केवल विश्वविद्यालय के राजभाषा

प्रकोष्ठ द्वारा बल्कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा मंत्रालय व राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय और उच्चस्तरीय संसदीय समिति द्वारा राजभाषा निरीक्षण किया जाता है। इस क्रम में विश्वविद्यालय में संघ की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य), भोपाल के कार्यालयाध्यक्ष एवं उपनिदेशक कार्यान्वयन श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा द्वारा विश्वविद्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया।

श्री मेहरा द्वारा सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ के राजभाषा अधिकारी एवं संयुक्त कुलसचिव श्री संतोष सोहगौरा एवं कर्मचारियों के साथ बैठक कर राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा एवं विचार-विमर्श किया। इस दौरान राजभाषा अधिकारी श्री संतोष सोहगौरा ने पीपीटी प्रस्तुति के माध्यम से विश्वविद्यालय में राजभाषा की प्रगामी प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने निरीक्षणकर्ता को अवगत कराया कि माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से विश्वविद्यालय में न केवल राजभाषा हिन्दी बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं को निरंतर प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इससे

विश्वविद्यालय में बहुभाषिक संस्कृति का निरंतर पुष्पन-पल्लवन हो रहा है। श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा ने विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता से सौजन्य भेंट करते हुए विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारियों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे कार्य अन्य सरकारी कार्यालयों के लिए भी प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अपार संभावनाएं निहित हैं।

माननीया कुलपति महोदया ने श्री मेहरा को अवगत कराया कि अभी हाल में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की राजभाषा निरीक्षण समिति द्वारा भी विश्वविद्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन एवं उनके प्रकाशनों की सराहना की है जो कि विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने आश्वस्त कराया कि विश्वविद्यालय राजभाषा एवं अन्य भारतीय भाषाओं के संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगा।

राजभाषा प्रकोष्ठ के सदस्यों के साथ निरीक्षणकर्ता श्री मेहरा ने प्रशासनिक एवं नवीन प्रशासनिक भवन स्थित विभिन्न कार्यालयों/अनुभागों का भ्रमण कर राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का निरीक्षण किया। श्री मेहरा ने विश्वविद्यालय के वित्त एवं लेखा अनुभाग एवं स्थापना अनुभाग सहित अन्य अनुभागों का निरीक्षण किया तथा राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित दस्तावेजों का परीक्षण किया। उन्होंने वित्त एवं लेखा अनुभाग द्वारा किए जाने वाले पत्राचार में हिन्दी के उत्कृष्ट प्रयोग की सराहना करते हुए कहा कि कर्मचारियों को वेतन, पेंशन, अदेय प्रमाण-पत्र संबंधी सूचनाएं राजभाषा में प्राप्त होने पर उसकी सम्प्रेषणीयता भी बेहतर होती है। अनुभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि अनुभाग में उपयोग किए जाने वाले ऑनलाइन पोर्टल्स/सॉफ्टवेयरों में भी हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए। स्थापना अनुभाग का निरीक्षण करते हुए श्री मेहरा ने सेवा-पंजियों, व्यक्तिगत नस्तियों, अभिलेखों इत्यादि का निरीक्षण किया तथा कार्मिकों के प्रशिक्षण एवं हिन्दी ज्ञान के संबंध में विस्तार से चर्चा की। कार्यालय के निरीक्षण के दौरान श्री मेहरा ने प्रशासनिक भवन में प्रदर्शित प्रेरक हिन्दी कथनों, नामपट्टों एवं अन्य सूचनाएं द्विभाषी एवं हिन्दी में उपलब्ध प्रदर्शन सामग्री की प्रशंसा की। निरीक्षणकर्ता प्राधिकारी ने भारतीय भाषाओं के संरक्षण-संवर्धन के लिए स्थापित भारतीय भाषा प्रकोष्ठ तथा जवाहरलाल नेहरू पुस्तकालय, सूचना प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ एवं गौर संग्रहालय का भी दौरा किया। राजभाषा अधिकारी संतोष सोहगौरा ने गौर संग्रहालय की विशेषता बताते हुए कहा कि यह संग्रहालय विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉक्टर सर हरीसिंह गौर से जुड़ी विरासत को संजोने के लिए माननीया कुलपति महोदया की अभिनव संकल्पना है जिसमें डॉ. गौर के व्यक्तिगत पुस्तकालय एवं उनके द्वारा रचित साहित्य, उनके जीवनकाल के विभिन्न चित्रों आदि को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस संग्रहालय में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से जुड़ी संग्रहणीय सामग्री को भी स्थान दिया जा रहा है। राजभाषा निरीक्षण के दौरान वित्ताधिकारी श्री कुलदीपक शर्मा, सहायक कुलसचिव श्री दीपक शाक्य, श्री आशीष कुमार तिवारी,

श्रीमती ए.लक्ष्मी, अनुभाग अधिकारी डॉ. उदय श्रीवास्तव, डॉ. अशोक सैनी, श्री रोहित रघुवंशी, सूचना प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ के पदाधिकारी डॉ. रूपेन्द्र जुगल चौरसिया एवं श्री सचिन सिंह गौतम, जवाहरलाल नेहरू पुस्तकालय के पदाधिकारी डॉ. मोहन टी.ए., डॉ. मुकेश साहू एवं डॉ. अनुराग श्रीवास्तव सहित संबंधित अनुभागों के कर्मचारीगण उपस्थित रहे। निरीक्षण कार्यक्रम का समन्वयन राजभाषा अधिकारी श्री संतोष सोहगौरा ने किया। विशेष सहयोग हिन्दी अनुवादक अभिषेक सक्सेना एवं राजभाषा प्रकोष्ठ के उच्च श्रेणी लिपिक श्री विनोद रजक का रहा।

कैंसर के उपचार के शोध में फार्मेसी विभाग को भारतीय पेटंट

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के फार्मेसी विभाग की शोधार्थी एवं वर्तमान में राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा अनुसंधान संस्थान अहमदाबाद में रिसार्ज एसोसियट डॉ. साक्षी ने कैंसर में उपचार में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की.

इनके शोध कार्य लिपोसोम कम्पोजिशन एडं मैथ्ड फॉर टारगेटिंक ड्रग डिलेवरी का हाल ही में भारतीय पेंटट प्राप्त हुआ है. यह नवाचार स्तन कैंसर के इलाज के लिय दवा को लक्षित ढंग से पहुंचाने की दिशा में एक बडी उपलब्धि मानी जा रही है. इस शोध का उद्देश्य कैंसर की दवाओं को सीधे टयूमर कोशिकाओं तक पहुंचाकर स्वास्थ कोशिकाओं को नुकसान से बचाना है. उन्होंने बताया कि पारंपरिक कीमोथेरेपी में शरीर की सामान्य कोशिकाएं भी प्रभावित होती है. जिससे कई दुष्प्रभाव उत्पन्न होते है. लेकिन यह नई तकनीकि लक्षित वितरण प्रणाली के माध्यम से सिर्फ कैंसर कोशिकाओं पर प्रभाव डालती है. जिससे उपचार अधिक प्रभावी और सुरक्षित बनता है. पांरपरिक कीमोथेरेपी के मुकाबले काफी सुरक्षित और किफायती भी है. इसमें डॉक्सोरूबिसिन नामक एंटी कैंसर ड्रग को पॉलथिलीन ग्लाइकोल से लेपित लिपोसोम (पिगायेलेडिट लिपोसोम) के माध्यम से शरीर में ब्रेस्ट कैंसर की कोशिकाओं तक सीधे पहुंचाया गया। इस लिपोसोम को 4 नामक सेल पेनेट्रेटिंग पेप्टाईड से जोडा गया. जिसमें यह खासतौर पर कैंसर कोशिकाओं को पहचान कर उन तक ही दवा पहुंचाता है. इस तकनीकि से सामान्य स्वस्थ कोशिकाओं प्रभावित नहीं होती, जिससे कीमोथेरेपी की वजह से होने वाले बाल झडना, उल्टी कमजोरी जैस साइड इफेक्टस बेहद कम हो जाते है. इस प्रणाली की इन विट्रो (प्रयोगशाला) और इन वाइवो (जानवरों पर) टेस्टिंग में इसे बेहद कारगर और सुरक्षित पाया गया है. यह कैंसर कोशिकाओं की मृत्यु कर उनके डीएनए को क्षति पहुंचाता है। और टयूमर साइट पर लंबे समय तक बना रहता है. जिससे ड्रग की बार बार जरूरत नहीं पडती. इस तकनीकि से क्लिनिकल परीक्षण और उघोग में स्थानांतरण के लिये भी कार्य किया जा रहा है. जिससे यह नवाचार प्रयोगशाला से निकालकर आम जनमानस के जीवन को बेहतर बना सकें.

इस शोध कार्य के लिए डॉ. साक्षी को हाल ही विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा आयोजित 40वी युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार और नगद राशि से सम्मानित किया गया. यह उपलब्धि उनके शोध की वैज्ञानिक गुणवत्ता और सामाजिक महत्व को दर्शाती है. डॉ. साक्षी सोनी ने इस सफलता का श्रेय अपने मार्गदर्शक प्रो. वंदना सोनी और प्रो. सुशील कुमार काशव के साथ साथ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं अपने विभाग से सभी शिक्षकों और माता पिता श्रीमति कांता सोनी और श्री कृष्णा सोनी को दिया.

विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट सेल के माध्यम से हुआ 05 विद्यार्थियों का चयन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट सेल द्वारा राइनेक्स टेक्नोलॉजी बैंगलोर हेतु ऑनलाइन प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन दिनांक 02 से 03 अप्रैल 2025 को किया गया. उक्त प्लेसमेंट ड्राइव में भाग लेने हेतु छात्र काफी उत्साहित रहे

तथा उन्होंने इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया. उक्त ड्राइव में राइनेक्स टेक्नोलॉजी द्वारा सर्वप्रथम सागर समूह चर्चा (ग्रुप डिस्कशन) द्वारा 87 विद्यार्थियों में से 14 विद्यार्थियों का चयन साक्षात्कार हेतु किया गया जिनमें से साक्षात्कार उपरांत 05 विद्यार्थियों में साक्षी पाण्डेय, कम्प्यूटर साइंस विभाग, मयंक स्वामी, वाणिज्य विभाग, श्रुति शुक्ला, भूगोल विभाग, साक्षी पाटकर, भैतिकी विभाग एवं अर्पिता सोनी, वाणिज्य विभाग को इनसाइड सेल्स स्ट्रेटजिस्ट के रूप में पाँच लाख प्रति वर्ष के सी.टी.सी. पर चयनित किया गया. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा सभी चयनित विद्यार्थियों को बधाई देने के साथ-साथ विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के प्लेसमेंट हेतु किए जा रहे कार्यों की सराहना की. विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. अभिषेक बंसल एवं असिस्टेंट प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. शालिनी चौइथरानी द्वारा प्लेसमेंट सेल की संरक्षक एवं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा किए गए प्रयासों हेतु धन्यवाद दिया तथा चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी. विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. अभिषेक बंसल द्वारा बताया गया कि प्लेसमेंट सेल द्वारा उन्नति फाउंडेशन के सहयोग से विश्वविद्यालय के स्नातक तथा स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों हेतु 30 दिवसों का रोजगार योग्यता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करने जा रहा है जिसमें विद्यार्थियों को रोजगार पाने हेतु प्रभावी संचार, जीवन कौशल, व्यक्तित्व निर्माण, आत्मविश्वास निर्माण, मूल्यों को विकसित करना, वाद-विवाद, सार्वजनिक भाषण, मॉक साक्षात्कार आदि का प्रशिक्षण बिना किसी शुल्क के प्रदान किया जाएगा.

हाई परफॉरमेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी (एचपीटीएलसी) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने और वैश्विक पटल पर विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने के लिए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में 09 अप्रैल 2025 को उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में हाई परफॉरमेंस

थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी (एचपीटीएलसी) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन फॉरेंसिक साइंस विभाग में किया गया, जिसमें कुल 40 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में प्रो. देवाशीष बोस (प्रभारी शिक्षक) ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में हाई परफॉरमेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी और उन्नत उपकरणों के उपयोग की महत्ता को बताया. मुख्य वक्ता डॉ. अभिलाषा दुर्गवंशी ने हाई परफॉरमेंस थिन लेयर

क्रोमैटोग्राफी तकनीक की महत्ता और तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत की जानकारी दी. उनके द्वारा सैम्पल तैयार करने और अनुप्रयोगों के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी दी गई. डॉ. अभिलाषा दुर्गवंशी ने बताया की इस तकनीक का उपयोग चिकित्सा विज्ञान, दवाओं की खोज, वातावरण प्रदूषण, पेट्रोलियम उद्योग, विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थो में कीटनाशकों और हानिकारक रसायनो की उपस्थिति को जानने के लिए किया जाता है.

हैंड्स ऑन सत्र डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर द्वारा हाई परफॉरमेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. सीएआर तकनीकी टीम ने विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया. प्रतिभागियों ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया एवं उनका उत्तर दिया गया. प्रतिभागियों द्वारा हाई परफॉरमेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी तकनीक पर संपूर्ण हैंड्स ऑन सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, लक्ष्मी प्रिया प्रधान, शीतल प्रजापति, दीक्षा सिंह, रेमाली साई कृष्णा, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार और श्री अरविंद चडार की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव की पहल पर विभिन्न उपकरणों पर विश्वविद्यालय में समय समय पर कार्यशाला का आयोजन निरंतर किया जा रहा है.

डॉ. गौर एवं डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक चिंतन विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में डॉ. अम्बेडकर चेयर द्वारा डॉक्टर गौर एवं डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक चिंतन विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी में विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अवधेश कुमार तोमर ने कहा कि बिना ज्ञान और बिना शिक्षा के विकास संभव नहीं है. उन्होंने कहा कि जीवन लंबा होने की बजाय महान होना चाहिए. डॉ. गौर एवं डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक कार्यों के कारण समाज उनको हमेशा याद करेगा. डॉ आर. टी. बेंद्रे ने उक्त अवसर पर कहा कि डॉ. गौर एवं डॉ. अम्बेडकर ने जीवन भर सामाजिक परिवर्तन के लिए कार्य किया. डॉ. देवेंद्र कुमार ने कहा कि डॉ. गौर एवं डॉ. अम्बेडकर यह जानते थे कि समाज में परिवर्तन केवल शिक्षा के माध्यम से हो सकता है इसलिए दोनों महान व्यक्तियों ने शिक्षा को प्राथमिकता दी उसमें भी महिलाओं की शिक्षा के लिए विशेष प्रयास किया क्योंकि शिक्षा के माध्यम से विकास संभव है. अजब सिंह ने कहा कि दोनों ने ही कठिन परिस्थितियों में सामाजिक परिवर्तन, पिछड़ापन, शिक्षा एवं सामाजिक क्रांति के लिए जीवन भर कार्य किया. डॉ. योगेश कुमार पाल ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर मानते थे कि शिक्षा ही

मानव के विकास का आधार है. डॉ. रमाकांत ने कहा कि दोनों ने देश और समाज के लिए अपना सब कुछ समर्पण की शिक्षा हम सबको दी. बालचंद ने कहा कि बुद्ध को दोनों अपना आदर्श मानते थे. डॉ. अभय कुमार ने उक्त संगोष्ठी में डॉ. गौर एवं डॉ. अम्बेडकर के शोध विषय के बारे में बताया. संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे डॉ. रेड्डी ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से युवाओं को प्रेरणा मिलती है एवं डॉ. गौर और डॉ. अंबेडकर के विचार को आगे बढ़ाने में मदद मिलती है. डॉ. गौर एवं डॉ. अम्बेडकर की संविधान निर्माण में बड़ी भूमिका है. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शोध छात्र सम्यक बुद्ध, जितेंद्र कुमार, दीनदयाल अहिरवार, अमन, वीरेंद्र ठाकुर, विमलेश अहिरवार, सागर सिलेक्ट शरीफुल मंडल, रोशन कुमार आदि छात्र उपस्थित रहे.

आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ विश्वविद्यालय प्रगति की दिशा में नई उड़ान भरने जा रहा है- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालय को नये अकादमिक भवनों, स्वास्थ्य केंद्र, आईटी लैब, कन्वेंशन सेंटर और छात्रावासों के लिए 434.77 करोड़ रुपए स्वीकृत, वैली कैंपस में होगा निर्माण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर प्रगति की दिशा में नई उड़ान भरने जा रहा है. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालय को नये अकादमिक भवनों और छात्रावासों के लिए 434.77 करोड़ रुपए स्वीकृत किये गए हैं. इनमें इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी भवन के निर्माण के लिए 99.71 करोड़, होटल एंड कैटरिंग मैनेजमेंट, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हॉस्पिटलिटी एंड टूरिज्म मैनेजमेंट, वाणिज्य विभाग और प्रबंधन विभाग के एकीकृत भवन के लिए 67.60 करोड़, एक-एक हजार सीट की क्षमता वाले दो नए छात्रावास (एक बालक एवं एक कन्या छात्रावास) के लिए 194.50 करोड़, विश्वविद्यालय स्वास्थ्य केंद्र के लिए 15.42 करोड़, कंप्यूटर आधारित परीक्षा केंद्र, प्रयोगशाला, आईटी सेल एवं ऑनलाइन सेंटर के लिए 33.58 करोड़, बहु-उद्देश्यीय सम्मेलन केंद्र के लिए 23.96 करोड़ रुपए स्वीकृत किये गए हैं. इन सभी नए भवनों का निर्माण वैली कैम्पस में किया जाएगा. शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली में संपन्न हुई बैठक में ये सभी प्रस्ताव स्वीकृत किये गए हैं. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बैठक में विश्वविद्यालय में उपलब्ध मौजूदा संसाधनों, छात्रों की संख्या छात्रावासों की संख्या, छात्रावासों की सुविधाओं का उल्लेख करते हुए विस्तृत पावर-पॉइंट प्रजेंटेशन दिया और अतिरिक्त इंफ्रास्ट्रक्चर और विद्यार्थियों के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकताओं को रेखांकित किया. उन्होंने वर्ष 2023 में विश्वविद्यालय को नैक द्वारा प्रदत्त ए प्लस ग्रेड, विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या, विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रमों, शिक्षक और कर्मचारियों की संख्या, एकेडमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट के क्रियान्वयन में अग्रणी रहने और भारतीय सेना के महार रेजीमेंट के साथ हुए अकादमिक समझौता और अग्निवीरों को शैक्षणिक उन्नयन की दिशा में कार्य करते हुए उन्हें डिग्री प्रदान करने जैसी उपलब्धियों को रेखांकित किया. विश्वविद्यालय के विशाल परिसर, विश्वविद्यालय की उपरोक्त उपलब्धियों और विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों की लगातार बढ़ती संख्या, विविधता, विद्यार्थियों हेतु बढ़ती छात्रावासों की आवश्यकता, आधुनिक सुविधाओं के साथ अकादमिक भवनों की आवश्यकता, आधुनिक स्वास्थ्य केंद्र, आईटी केंद्र, कम्प्यूटर सेंटर, बहु-उद्देशीय सम्मेलन केंद्र आदि की आवश्यकता पर विचार करते हुए मंत्रालय द्वारा सभी प्रस्ताव स्वीकृत किये गये हैं.

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस उपलब्धि को साझा करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय लगातार अपने परिसर का विस्तार करता जा रहा है. वर्तमान में कई नवीन अकादमिक भवन, एकीकृत लैब और अन्य कई विभागों के विस्तारित भवन बनकर तैयार हो चुके हैं. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने **434.77 करोड़ रुपए** के निर्माण की नवीन परियोजनाओं को मंजूरी दी है. विश्वविद्यालय प्रगति की दिशा में नई उड़ान भरने जा रहा है. हम उत्कृष्ट अकादमिक प्रदर्शन के साथ ही हम आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर एवं संसाधन युक्त विश्वविद्यालयों में भी हम सर्वश्रेष्ठ होंगे. छात्रावासों की कमी के कारण विद्यार्थियों को काफी समस्या होती थी. अब इन दो नए छात्रावासों के बन जाने से छात्र-छात्राओं को काफी सुविधा होगी. विद्यार्थियों के मामले में हमारा विश्वविद्यालय एक तरह से पूर्णतः आवासीय विश्वविद्यालय बनने की ओर अग्रसर है. विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें यह हमारी प्राथमिकता में था. इसी उद्देश्य से एक आधुनिक स्वास्थ्य केंद्र भी बनकर तैयार होगा. आई टी सेंटर और कम्प्यूटर लैब बनने के बाद विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर बेस्ड परीक्षाओं का एक प्रतिबद्ध केंद्र भी बनेगा. इस केंद्र के माध्यम से विद्यार्थियों को कई अन्य तकनीकी प्रशिक्षण एवं सहयोग भी मिलेगा. पूरा का पूरा कॉमर्स एवं मैनेजमेंट विभाग अब एक बड़े भवन में संचालित हो सकेगा जिससे इन दोनों विषयों के शिक्षकों, विद्यार्थियों को अध्ययन-अध्यापन में काफी सुविधा होगी. बहु-उद्देशीय सम्मेलन केंद्र में एक वृहद् सभागार के साथ-साथ कई छोटे कांफ्रेंस हॉल, कमेटी कक्ष, शॉपिंग काम्प्लेक्स इत्यादि होंगे जो विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं सभी विभागों एवं केन्द्रों की आवश्यकताओं को पूर्ण करेंगे.

इतिहास विभाग में महात्मा ज्योतिबा फुले की 198 वीं जयंती मनाई गई

डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के इतिहास विभाग में डॉ. अम्बेडकर चेयर और इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा ज्योतिबा फुले की 198 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया, 'आज

कैसे याद करें' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अम्बेडकर चेयर के सहायक प्राध्यापक डॉ. देवेंद्र विश्वकर्मा ने विषय प्रवर्तन और स्वागत भाषण दिया. उन्होंने बताया कि हमें महात्मा फुले के जीवन से यह सीख मिलती है, कि सामाजिक परिवर्तन का प्रारंभ हमें स्वयं के घर और परिवार से करना चाहिए और हमें उनके विचारों को आगे बढाने का कार्य करना चाहिए. डॉ. अंबेडकर चेयर के प्रभारी अध्यक्ष प्रो. राजेश गौतम ने सावित्रीबाई फुले के संघर्षपूर्ण जीवन से सभी को अवगत कराया और कहा कि हमें उनके जीवन से शिक्षा के महत्व की प्रेरणा लेनी चाहिए तथा हमें अपनी सोच को वैज्ञानिक एवं तार्किक बनाना चाहिए.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे इतिहास विभाग के विभागध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार ने कहा कि हमें आज गर्व की अनुभूति होती है कि वर्तमान युवा पीढ़ी के विचार हमारे नायकों के प्रति इतने सुंदर, तार्किक एवं शोध पूर्ण हैं. आज महिलाओं एवं बहुजन की बढ़ती साक्षरता एवं वैज्ञानिक सोच यह सत्यापित करती है, कि महात्मा फुले ने उस कालखंड में जब समाज आडम्बर एवं पाखंड से ग्रसित रहा तब उन्होंने जो स्वप्न देखा था वह साकार होने की दिशा में अग्रसर है, यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है. डॉ. संजय बरोलिया ने कहा कि इतना समय होने के बावजूद आज भी समाज में छुआछूत, भेदभाव विद्यमान है. उन्होंने बताया कि थॉमस पेन की पुस्तक 'द राइट्स ऑफ़ मैन' के विचार हमें ज्योतिबा

फुले के कृत्यों पर स्पष्ट दिखते हैं. कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. पंकज सिंह ने कहा कि फुले का सम्पूर्ण जीवन शिक्षा और महिला कल्याणों व महिला सशक्तिकरण को समर्पित रहा. डॉ. सिंह ने बताया कि ज्योतिबा ने असमानता, अन्याय, अत्याचार एवं अशिक्षा से लड़ना सिखाया. ज्योतिबा हर पिछड़े, शोषित, दमित एवं पीड़ित के लिए प्रेरणाश्रोत थे उनके विचार आज भी प्रासंगिक है. अर्थशास्त्र विभाग से डॉ. वीरेन्द्र मटसेनिया व संस्कृत विभाग के डॉ. रामहेत गौतम ने भी उपस्थित रहकर ज्योतिबा फुले पर अपने विचार व्यक्त किए. इतिहास विभाग के शोधार्थी मोनाली यादव, विशेष जोठे, अम्बुज श्रीवास्तव, एवं परास्नातक के विद्यार्थी संत कुमार सोनी और द्रोपदी रजक ने भी महात्मा फुले पर अपने विचार अत्यंत ही सारगर्भित एवं सृजनात्मक तरीकों से प्रेषित किए. कार्यक्रम समन्वयक डॉ. पंकज सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया. इस कार्यक्रम में इतिहास विभाग के शोधार्थी आशू अहिरवार, निधि सोनी, अभिलाषा राजपूत, भूपेन्द्र अहिरवार, प्रशांत चौबे, अतुल सिंह चंदेल, शिवानी प्रजापति, अभय सिंह चौहान, विजय प्रकाश सिंह, प्रावीण्या श्रीवास्तव एवं विभाग के परास्नातक के भी विद्यार्थी उपस्थित रहे.

अम्बेडकर जयंती मात्र स्मरण नहीं, विश्वविद्यालय की कार्यसंस्कृति में समरसता का संकल्प है- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉ. अम्बेडकर: असहमति की निडर आवाज और सामाजिक पुनर्निर्माण के शिल्पी- डॉ. सदानंद दामोदर सप्रे

डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर में भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134वीं जयंती के अवसर पर डॉ. अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र एवं डॉ. अम्बेडकर चेयर के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में डॉ.

अम्बेडकर: लोकतांत्रिक चेतना और सामाजिक न्याय के सर्वकालिक स्वर विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात सामाजिक चिंतक डॉ. सदानंद दामोदर सप्रे रहे, जबकि इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ डॉ. अम्बेडकर, डॉ. हरीसिंह गौर, महात्मा बुद्ध तथा माँ सरस्वती के चित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ.

मुख्य अतिथि डॉ. सप्रे ने डॉ. अम्बेडकर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी

ऑक्सफोर्ड जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा अध्ययन के प्रति समर्पण के बल पर असाधारण उपलब्धियाँ अर्जित कीं. ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा किए गए एक शोध में उन्हें मानवता के 'मेकर्स ऑफ यूनिवर्स' की सूची में स्थान दिया गया. उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर केवल संविधान निर्माता ही नहीं थे, बल्कि दलितों सहित सम्पूर्ण समाज के उद्धारक, प्रखर दूरदृष्टा और निडर विचारक थे. डॉ. सप्रे ने यह भी कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने समाज को यह संदेश दिया कि असहमति को साहस और निडरता के साथ,

विधिसम्मत मार्ग से अभिव्यक्त किया जाना चाहिए. उनके अनुसार, अम्बेडकर के तीन प्रमुख गुरु कबीर, बुद्ध और महात्मा फुले रहे, जिनसे उन्होंने समरसता, विवेक और सामाजिक न्याय की प्रेरणा ली. विशिष्ट अतिथि प्रो. अशोक अहिरवार ने अपने वक्तव्य में कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने आजीवन वंचित वर्गों सहित समाज के प्रत्येक वर्ग के अधिकारों की पैरवी की. वे केवल समाज सुधारक ही नहीं, बल्कि उच्चकोटि के विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और संवैधानिक विचारक भी थे. उनका जीवन संघर्ष और उपलब्धियों का अद्भुत संगम है, जो आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है. उन्होंने यह भी कहा कि डॉ. अम्बेडकर के जीवन में प्रतिशोध का नहीं, बल्कि सुधार और समरसता का भाव था. उन्होंने जातिवाद और भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष कर समाज को संगठित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर की जयंती केवल एक तिथि नहीं, बल्कि उनके विचारों, सद्भावना, समरसता और दूरदृष्टि को आत्मसात करने का अवसर है. उन्होंने बताया कि आज भी डॉ. अम्बेडकर को उतनी ही ऊर्जा, सम्मान और आत्मीयता से याद किया जाता है, जितनी उनके जीवनकाल में थी. डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक योगदान ने भारत में सामाजिक न्याय एवं समावेशी समाज की नींव रखी. उन्होंने उल्लेख किया कि आज देशभर में अनेक भवन, संस्थान और लगभग 15 विश्वविद्यालय डॉ. अम्बेडकर के नाम पर संचालित हैं, यह उनकी असाधारण प्रतिभा, योग्यता और जीवटता का प्रतीक है.

कार्यक्रम में प्रो. चंदा बेन, समन्वयक, डॉ. अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा उर्दू विभागाध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र यादव ने मुख्य अतिथि का परिचय कराया. कार्यक्रम का संचालन डॉ. वीरेंद्र मटसेनिया द्वारा एवं आभार

प्रदर्शन प्रो. राजेश गौतम द्वारा किया गया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में पिछले पाँच दिनों से आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन भी कराया गया. कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. सत्य प्रकाश उपाध्याय, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. सुशील कासव, प्रो. के.एस. पित्रे, सुनील देव जी, क्षेत्र संपर्क प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, डॉ. सतीश कुमार, डॉ. देवेंद्र विश्वकर्मा, अनिल अवस्थी, संदीप जैन, ऋषि मिश्र, नलिन जैन, प्रदीप तिवारी, संदीप तिवारी, डॉ. श्वेता नेमा, मनीष यादव, नीरज उपाध्याय, करण बहादुर, प्रो. अमर जैन, आशीष द्विवेदी, सहित विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, कर्मचारी, छात्र एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे.

इतिहास विभाग में अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में विचार गोष्ठी आयोजित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में 'बाबा साहेब अम्बेडकर के बहुआयामी व्यक्तित्व के आत्मसाती तत्व' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के

समन्वयक सहायक प्राध्यापक डॉ. संजय बरोलिया ने स्वागत भाषण दिया. उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा के विषय में अपनी बात रखी एवं विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार को इस बात के लिए कृतज्ञता प्रकट की कि उन्होंने ऐसे सुंदर आयोजन के लिए निर्देश दिये. शोधार्थी निधि सोनी ने वर्तमान समय में समाज में व्याप्त भेदभाव को उजागर किया और कहा कि हम डॉ. अम्बेडकर को याद करें व उनकी सीखों की चर्चा करें और अनुकरण करें. छात्र अहिरंत पटैरिया ने डॉ. अम्बेडकर के नारीवादी विचारों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सामाजिक समानता सर्वप्रथम आवश्यकता है. शोधार्थी प्रावीण्या श्रीवास्तव ने शिक्षा पर अम्बेडकर के दृष्टिकोण से सीखों पर विचार व्यक्त करते हुए बताया कि अम्बेडकर अक्षरों की ताकत, शब्दों का सामर्थ्य, भाषा का बल और ज्ञान का महत्व जानते थे. छात्रा ऋचा ने संविधान लेखन में डॉ. अम्बेडकर के योगदान को उजागर किया. छात्र पारस चौरसिया ने डॉ. अम्बेडकर के छात्र जीवन के संघर्ष व सफलताओं को उजागर किया. छात्र हर्ष ने अपने विचार रखते हुए बताया कि डॉ. अम्बेडकर को धर्मांतरण की आवश्यकता क्यों पड़ी. छात्रा पूजा ने कविता के माध्यम से डॉ. अम्बेडकर के जीवन में उनकी मां की भूमिका को बताया. छात्रा राखी ने आरक्षण की आवश्यकता, स्थापना के पहलू को उजागर करते हुए यह बताने का प्रयास किया कि आरक्षण अनुदान नहीं न्याय है. छात्रा संजना सिंह ने अंर्तजातीय विवाह के लाभ को अपने विचारों को आंकड़ों के माध्यम से प्रस्तुत किया. छात्रा पयोधी पाण्डेय ने डॉ. अम्बेडकर के पत्रकारिता में योगदान पर प्रकाश डाला. सहायक प्राध्यापक डॉ. पंकज सिंह ने बाबा साहेब के आत्मसाती तत्त्व को कविता की कुछ पंक्तियों के माध्यम से उजागर किया और बाबा साहेब के परिप्रेक्ष्य में कहा, 'वक्त बदल कर जो नसीब बदल दे, इन्सान वही जो तकदीर बदल दे'. उन्होंने यह भी बताया कि दुनिया के सभी महान लोगों ने असमानता के विरोध में संघर्ष किया और संघर्ष से हमें घबराना नहीं चाहिए, ऐसी सीख भी दी. प्रो. बी.के. श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, 'सबसे कठिन काम सरल होना है'. प्रो. श्रीवास्तव ने सभी विद्यार्थियों व शोधार्थियों से 'द बुद्ध एंड हिज धम्म' पुस्तक पढ़ने का अनुरोध किया. विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार ने बताया कि शिक्षकों की उपस्थिति में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने अपने विचार प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए, यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है. उन्होंने कहा कि विभाग में ऐसे ही शैक्षणिक एवं अध्ययनशील कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर होता रहेगा, इससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है. छात्रा पयोधी ने कार्यक्रम का संचालन किया व शोधार्थी विशेष जोठे ने सभी का आभार व्यक्त किया. इस कार्यक्रम में शोधार्थी अखिलेश सेन, अभिलाषा राजपूत, प्रशांत चौबे, भूपेन्द्र अहिरवार, अतुल सिंह चंदेल, विशेष जोठे, अम्बुज कुमार श्रीवास्तव एवं परास्नातक के विद्यार्थी उपस्थित रहे.

विश्वविद्यालय परिसर स्थित केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 4 में प्रवेश उत्सव हुआ संपन्न

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय परिसर स्थित केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 4 सागर में कक्षा एक में नव प्रवेशी विद्यार्थियों हेतु आयोजित विद्या प्रवेश कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. अभिभावकों के साथ विद्यालय पधारे सभी नन्हे

मुन्ने विद्यार्थियों का संगीत शिक्षिका श्रीमती शारदा प्रजापति द्वारा तिलक लगाकर एवं प्राचार्य महोदय श्री राजेंद्र सिंह वर्मा द्वारा उपहार भेंट कर स्वागत किया गया. प्राचार्य द्वारा नव प्रवेशी विद्यार्थियों से कहा गया कि आज से बच्चों के जीवन के एक नए अध्याय की शुरुआत हो रही है जो उनके जीवन में उज्जवल भविष्य की नींव रखेगी. तत्पश्चात कक्षा एक की कक्षा अध्यापिका श्रीमती शिवांगी तोमर द्वारा बच्चों के लिए विभिन्न रोचक गतिविधियों का आयोजन किया गया एवं विद्यालय का भ्रमण कराया गया. विद्यालय के शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को सहज कर उनका परिचय लेकर उनसे मेलजोल बढ़ाने का प्रयास किया गया. विद्यालय की परंपरा का अनुसरण करते हुए नवप्रवेशी विद्यार्थियों को प्राचार्य महोदय द्वारा पुस्तकोपहार दिया गया, एवं विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की गई.कार्यक्रम के सफलतापूर्वक संचालन में सुश्री अनीता डोंगरे, श्री मनोज कुमार नेमा एवं समस्त प्राथमिक शिक्षकों का योगदान रहा.

औषधीय पौधों के महत्व एवं प्राकृतिक उपचार पद्धतियों पर विशेष व्याख्यान आयोजित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंध विभाग द्वारा एक विशेष अतिथि व्याख्यान का आयोजन विभागाध्यक्ष प्रो. वाई. एस. ठाकुर के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ. आयोजन में आनंद जैन, संस्थापक जीवन हर्बल उत्पाद

और सोलर प्लांट, ने छात्रों को अपने अनुभवों से अवगत कराया. अपने उद्बोधन में श्री जैन ने बताया कि कैसे उन्होंने पारंपरिक हर्बल ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर जीवन हर्बल उत्पाद की नींव रखी. उन्होंने औषधीय पौधों के महत्व, प्राकृतिक उपचार पद्धतियों और उनके प्रभावी उपयोग पर प्रकाश डाला. उन्होंने बताया कि स्टीविया प्राकृतिक रूप से मीठा होता है, ऐसे में चीनी से कई गुना अधिक लाभदायक है. उन्होंने इसकी बागवानी के विषय में भी छात्रों को अवगत कराया. इसके साथ ही उन्होंने अपने सोलर प्लांट प्रोजेक्ट पर भी विस्तार से चर्चा की, जिसमें उन्होंने अक्षय ऊर्जा की महत्ता, पर्यावरणीय प्रभाव और युवा उद्यमियों के लिए इसमें मौजूद अवसरों की जानकारी दी. छात्रों ने श्री जैन से उत्साहपूर्वक सवाल पूछे और उद्यमिता, स्टार्टअप शुरू करने की चुनौतियों व संभावनाओं पर गहन चर्चा हुई. व्याख्यान का उद्देश्य छात्रों को नवाचार सतत विकास और स्वावलंबन की दिशा से प्रेरित करना था, जिसे श्री जैन ने पूर्ण रूप से सफल बनाया. कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ. उक्त अवसर पर विभाग के शिक्षक, विद्यार्थियों सहित कर्मचारी उपस्थित रहे.

कन्फोकल लेजर स्कैनिंग माइक्रोस्कोप (सीएलएसएम) पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में कन्फोकल लेजर स्कैनिंग माइक्रोस्कोप (सी एल एस एम) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन किया

गया, जिसमें चुनिंदा 13 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. डॉ. विवेक कुमार पांडे (प्रभारी, सीएआर) ने सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी. उन्होंने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली आगामी कार्यशालाओं की भी जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. अर्चिता सिंह ने बताया सी एल एस एम एक शक्तिशाली इमेजिंग तकनीक है, जिसका उपयोग जीवविज्ञान, नैनोटेक्नोलॉजी और मटेरियल साइंस जैसे क्षेत्रों में किया जाता है. पारंपरिक लाइट माइक्रोस्कोप के विपरीत, सी एल एस एम लेजर लाइट और पिनहोल का उपयोग करके केवल एक बिंदु पर ध्यान केंद्रित करता है और प्रत्येक परत से चित्र कैप्चर करता है. इससे शोधकर्ताओं को नमूने के तीन आयामी चित्र प्राप्त करने में मदद मिलती है. जीवित कोशिकाओं और ऊतकों का अध्ययन करते समय शोधकर्ताओं को कोशिकाओं के अंदर की गतिविधियों जैसे प्रोटीन का स्थान और जीन अभिव्यक्ति को वास्तविक समय

में देखने की सुविधा देता है. सामग्री विज्ञान में नैनोमैटेरियल्स, कोटिंग्स और पतली परतों का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है. इस तकनीक के माध्यम से शोधकर्ता इन सामग्रियों की सतह परिष्करण, दोष, और परतों का विश्लेषण कर सकते हैं. हैंड्स ऑन सत्र शिवप्रकाश सोलंकी, आशीष चढ़ार द्वारा सी एल एस एम के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. डॉ. अर्चिता सिंह ने प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया एवं उनका उत्तर दिया. सैम्पल तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था. प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया. प्रतिभागियों द्वारा सी एल एस एम पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, श्री सौरभ साह, श्री आशीष चढ़ार, श्री अरविंद चडार, श्री चंद्रप्रकाश सैनी और श्री प्रद्युम्न नामदेव की तकनीकी देखरेख में आयोजित किया गया.

रसायनशास्त्र विभाग के शोध छात्र रूपेश विश्वकर्मा को सर्वश्रेष्ठ ओरल प्रेजेंटेशन सम्मान

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर रसायनशास्त्र विभाग के शोध छात्र रूपेश विश्वकर्मा को सर्वश्रेष्ठ ओरल

प्रेजेंटेशन के सम्मान से सम्मानित किया गया है. यह सम्मान ज्ञानवीर विश्वविद्यालय, सागर इंस्टीट्यूट फार्मास्युटिकल साइंसेज़ में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुत किया गया. रसायनशास्त्र विभाग में रूपेश विश्वकर्मा प्राइमरीज (Cu-Ni, ZnO,) ग्रीन कैटालिस्ट के रूप में उपयोग किया गया-कैटलिस्ट के रूप में उपयोग करते हुए, नए रिसर्चर नियुक्त इंडोल डेरिवेटिव्स पर काम कर रहे हैं. उनका शोध मुख्य रूप से वैज्ञानिक कैंसर उपचार तकनीक आधारित ट्यूब्युलिन प्रोटीन को लक्षित करता है. इस विषय पर उनके द्वारा दी गई प्रभावशाली प्रस्तुति के लिए उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया. रूपेश विश्वकर्मा यह शोध प्रो. रत्नेश दास के मार्गदर्शन में कर रहे हैं.

शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व विकास का भी केंद्र है विश्वविद्यालय: कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

समाज को ममत्व जीजाबाई से, कृतित्व अहिल्याबाई से व नेतृत्व लक्ष्मीबाई से सीखने की आवश्यकता है: डॉ. संजय पाठक

विश्वविद्यालय इकाई डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर द्वारा 22 अप्रैल 2025 को विश्वविद्यालय के रंगनाथन सभागार में भारतीय शिक्षण मंडल का 56वां स्थापना दिवस समारोह मनाया गया. कार्यक्रम का आरंभ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती, भारत माता और गौर साहब की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन, पुष्प अर्पण के साथ हुआ. इस अवसर पर

संगीत विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अवधेश प्रताप तोमर ने सरस्वती प्रस्तुत की, डॉ. अभिज्ञान द्विवेदी ने ध्येय श्लोक व डॉ. शारदा विश्वकर्मा ने ध्येय वाक्य का वाचन किया. इस अवसर पर 'शिक्षा से ज्ञान, ज्ञान से चरित्र, और चरित्र से राष्ट्र का निर्माण' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया. समारोह के मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. संजय पाठक ने कहा कि शिक्षा से हमें केवल ज्ञान नहीं संस्कार व श्रेष्ठ जीवन मूल्य भी प्राप्त करना है, इससे हम विद्वान नहीं विद्यावान बनेंगे. जो विद्यावान होता है उसके व्यक्तिगत, सामाजिक, आध्यात्मिक और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण हो जाता है और वह चरित्रवान व्यक्ति राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है. उन्होंने कहा कि किसी भी राष्ट्र का उत्थान तब तक नहीं हो सकता जब तक उसका अपना तंत्र न विकसित हो. उन्होंने कहा कि हमें मातृत्व जीजाबाई से कृतित्व अहिल्याबाई से व नेतृत्व लक्ष्मीबाई से सीखने की आवश्यकता है. भारत को श्रेष्ठ भारत बनाने के लिए आत्मविस्मृत समाज को 1000 साल पूर्व के भारत की गौरवशाली अतीत की याद दिलाना अत्यंत आवश्यक है. उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में समाहित ज्ञान का उदाहरण देते हुए अगस्त्य संहिता के विभिन्न उदाहरण देकर भौतिक विज्ञान और

प्राकृतिक विज्ञान के सजीव उदाहरण प्रस्तुत किए. इस समारोह की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतीय शिक्षण मंडल विगत 56 वर्षों से शिक्षा के मूल्यों को संवारने और भारतीयता को गढ़ने का काम कर रहा है, उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शामिल अवसर इसके सजीव उदाहरण हैं, हमारा विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान और चरित्र निर्माण पर केंद्रित कार्य कर रहा है.

विश्व विद्यालय इकाई संयोजक प्रो. सुशील कुमार काशव ने 56 वे स्थापना दिवस कार्यक्रम में भारतीय शिक्षण मंडल का परिचय दिया और विषय प्रवर्तन कर शिक्षा में रामत्व की संकल्पना पर जोर दिया. उन्होने कहा शिक्षा लोगों की संवेदनशीलता और मानवीयता को आकर देती है. इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. मनीष वर्मा ने विकसित भारत 2047 की कल्पना को साकार करने के लिए प्राचीन जीवन पद्दति के जीवन मूल्यों को समाहित करने की बात कही. उन्होंने कहा कि कोई भी शिक्षक पहले राष्ट्र का शिक्षक होता है उसके बाद ही वह किसी भी विषय का शिक्षक हो सकता है. उन्होंने कहा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पुनः भारतीय जीवन मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास कर रही है.

अंत में अध्यक्षता कर रहीं डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय की लोकपाल एवं भारतीय शिक्षण मंडल की मार्गदर्शक प्रो. अर्चना पांडेय जी ने कहा कि भारतीय शिक्षण मंडल शिक्षा के मूलभूत चार स्तंभों, उद्देश्य, नीति, पाठ्यक्रम और पद्दति में भारतीयता लाने के लिए गंभीर प्रयास कर रहा है. कार्यक्रम के अंत में डॉ. अपर्णा श्रीवास्तव ने अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया. डॉ. संदीप शुक्ला द्वारा प्रार्थना एवं कल्याण मंत्र का वाचन किया गया और यह आयोजन सम्पन्न हुआ. इस समारोह का संचालन डॉ. देवकी नंदन शर्मा ने किया. इस समारोह में भारतीय शिक्षण मंडल, महाकौशल प्रांत के पदाधिकारी एवं जिला सागर के कार्यकर्ता, विश्वविद्यालय इकाई के समस्त कार्यकर्ता व विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, विद्यालयों के शिक्षक गण, शोधार्थीगण भी उपस्थित थे.

युवाओं को भारत के गौरवशाली अतीत को बताये जाने की आवश्यकता है- धर्मेन्द्र भाव सिंह

शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि चरित्र और आत्मबल का निर्माण भी हो- कुलपति

भारतीय मन, मानस और संस्कृति का पुनर्बोध विषय पर श्री धर्मपाल स्मृति द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के अभिमंच सभागार में श्री धर्मपाल स्मृति द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ मां सरस्वती के सम्मुख अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन और वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश शासन के राज्यमंत्री श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी रहे, कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि मुख्य चुनाव आयुक्त श्री मनोज श्रीवास्तव, सागर

स्कूल शिक्षा संयुक्त संचालक डॉ. मनीष वर्मा, धर्मपाल शोधपीठ के निदेशक संतोष वर्मा एवं शैक्षिक अध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार जैन विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन थे.

डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए भारतीय इतिहासकार और गांधीवादी विचारक धर्मपाल जी के जीवन और चिंतन पर विस्तार से प्रकाश डाला. उन्होंने बताया कि धर्मपाल जी आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से असंतुष्ट थे और मानते थे कि यह भारतीय आत्मा से अलग करती है. उनका मानना था कि भारत का वास्तविक उत्थान तभी संभव है जब हम यूरोपीय बौद्धिक प्रभावों से मुक्त होकर अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ें. डॉ. तिवारी ने प्रतिभागियों से इन सत्रों में सक्रिय भागीदारी का आग्रह किया और कहा कि इस विमर्श से हम भारत की आत्मा के करीब पहुंच सकते हैं.

कुलपति ने अध्यक्षीय उद्बोधन में भारतीय संस्कृति, मूल्य आधारित शिक्षा और युवाओं के व्यक्तित्व विकास की आवश्यकता पर बल दिया. उन्होंने संस्कृति विभाग भोपाल का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम भारतीय मानस के पुनरुद्धार की दिशा में एक सार्थक पहल है.

उन्होंने कहा कि आधुनिकता, उपभोक्तावाद और औद्योगीकरण के प्रभाव में भारतीय समाज अपनी मूल सांस्कृतिक जड़ों से दूर हो गया है. उन्होंने युवाओं में भारतीय मूल्यों, जैसे योग, आयुर्वेद, पारिवारिक संस्कार और राष्ट्र सेवा की भावना जागृत करने की आवश्यकता जताई. उन्होंने शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्ति तक सीमित न रखते हुए, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से मूल्य आधारित, कौशल उन्मुख और चरित्र निर्माण केंद्रित शिक्षा को लागू करने की बात की. विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे स्किल एन्हांसमेंट कोर्स, वैल्यू बेस्ड एजुकेशन और कम्युनिटी कॉलेज पहल का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि कैसे विश्वविद्यालय समाज निर्माण में योगदान दे रहा है. कुलपति ने कहा कि हमें भारतीय ज्ञान परंपरा, गीता, रामायण,

महाभारत जैसे ग्रंथों को शिक्षा प्रणाली में शामिल कर छात्रों को जीवन मूल्यों से जोड़ना होगा. उन्होंने स्वामी विवेकानंद और डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचारों की बात करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि चरित्र और आत्मबल का निर्माण करना होना चाहिए.

श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने भारतीय संस्कृति के गौरवशाली अतीत पर प्रकाश डाला और धर्मपाल जी के योगदान को अविस्मरणीय बताया. उन्होंने शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी प्रभाव की आलोचना करते हुए युवाओं को भारतीय ज्ञान, भाषा और विरासत से जुड़ने का आह्वान किया. उन्होंने कहा कि पश्चिमी शिक्षा प्रणाली ने भारतीय मूल्यों को पीछे छोड़ दिया है, जबकि भारतीय संस्कृति वैज्ञानिक और

दार्शनिक दृष्टिकोण में अग्रणी रही है. उन्होंने अनेक ऐतिहासिक और पौराणिक उदाहरणों के माध्यम से बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा ने पृथ्वी की गोलाई, गुरुत्वाकर्षण और जीवन विज्ञान जैसे विषयों पर हजारों वर्ष पहले ही गहन अध्ययन किया था. उन्होंने संस्कृत भाषा को सभी भाषाओं की जननी बताते हुए युवाओं से भारतीयता पर गर्व करने की बात कही. उन्होंने एक कविता के माध्यम से देश की सांस्कृतिक विरासत पर गर्व व्यक्त किया और युवाओं को जागरूक होने का संदेश दिया। उन्होंने आयोजकों और उपस्थित जनसमुदाय का आभार व्यक्त करते हुए 'भारत माता की जय' के उद्घोष के साथ अपना उद्बोधन समाप्त किया.कार्यक्रम में छह तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया है, जिसमें विद्वान वक्ता धर्मपाल जी के विचारों, इतिहास विश्लेषण और सामाजिक दृष्टिकोण पर विस्तार से चर्चा करेंगे. कार्यक्रम में स्कूल शिक्षा विभाग के प्रतिभागी, विवि के शिक्षक, शोधार्थी प्रतिभागिता कर रहे हैं. आभार ज्ञापन संतोष वर्मा जी ने दिया. संचालन डॉ. किरण आर्य ने किया.

अतिथियों ने किया डॉ. गौर को नमन, पुष्पांजलि दी

कार्यक्रम के उदघाटन से पूर्व मध्य प्रदेश शासन के राज्यमंत्री श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी एवं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गौर समाधि पहुंचकर डॉ. गौर के चरणों में पुष्पांजलि अर्पित की. इस अवसर पर प्रो. चंदा बेन, प्रो. राजेन्द्र यादव, डॉ. नवीन सिंह, डॉ. विवेक जायसवाल उपस्थित थे.

अतिथियों ने किया मध्य भारती शोध पत्रिका के नवीन अंकों का विमोचन

कार्यक्रम के दौरान अतिथियों ने मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान की शोध पत्रिका मध्य भारती के नवीनतम अंकों 86 एवं 87 का विमोचन किया. इस अवसर पर सम्पादक मंडल के सभी सदस्य उपस्थित थे.

स्टॉर्टअप, नवाचार एवं उद्यमिता विषय पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल एवं कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के संयुक्त तत्वावधान में स्र्टाटअप, नवाचार एवं उद्यमिता विषय पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन 23 अप्रैल 2025 को किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. संजीव कुमार मजूमदार को आमंत्रित किया गया. डॉ. मजूमदार वर्तमान में राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम, नई दिल्ली में वरिष्ठ प्रबंधक और प्रौद्योगिकी प्रमुख (नई सुविधाएं) के पद पर कार्यरत हैं, जो

भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग के अंतर्गत एक उद्यम है. डॉ. मजूमदार ने विश्वविद्यालय में हो रहे विभिन्न शोध कार्यो का पेटेंट कराने संबंधी प्रक्रिया एवं उसमें उनकी संस्था राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम की भूमिका की जानकारी दी साथ ही इन शोध कार्यों को स्टार्टअप के माध्यम से प्रोडक्ट में परिवर्तित करने पर विस्तृत चर्चा की. डॉ. मजूमदार द्वारा विद्यार्थियों से उनके स्टार्टअप के विचारों के संबंध में जाना तथा उन्हें उनके संबंध में उचित सलाह भी प्रदान की.

इस संवाद कार्यक्रम में भाग लेने हेतु विद्यार्थी काफी उत्साहित रहे तथा उन्होंने इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया. कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के विभागाध्यक्ष तथा प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल कोऑर्डिनेटर डॉ. अभिषेक बंसल द्वारा डॉ. मजूमदार के प्रति आभार व्यक्त किया तथा बताया कि प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल की संरक्षक कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के निर्देशानुसार स्टार्टअप पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है. वर्तमान में प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल द्वारा चलाए जा रहे निरंतर प्लेटफार्म के माध्यम से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों से स्टार्टअप एवं व्यवसायिक विचार आमंत्रित किये गये हैं जिसमें अब तक लगभग 29 विद्यार्थियों द्वारा अपने व्यापारिक आईडिया गूगल फार्म के माध्यम से प्रस्तुत किये गये हैं एवं आगे आने वाले कार्यक्रम में विद्यार्थियों को प्लेटफार्म प्रदान किया जाएगा तथा इनके विकास हेतु विद्यार्थियों की सहायता की जाएगी.

कार्यक्रम में कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के शिक्षक श्री कमल कांत, डॉ. कविता साहू, डॉ. पंगंबम सेंदाश सिंह विश्वविद्यालय के सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. अनुराग श्रीवास्तव एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे.

पुस्तक का हर पन्ना हमें नए विचारों और नई संस्कृति से परिचय कराता है- कुलपति

विश्वविद्यालय में विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाया गया

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के जवाहरलाल नेहरु केन्द्रीय पुस्तकालय के रंगनाथन भवन में पुस्तक और पठन के आनंद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ल्ड बुक और कॉपीराइट डे का आयोजन किया गया. इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया.

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने रंगनाथ भवन, जवाहरलाल नेहरु केन्द्रीय पुस्तकालय में 'बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण और प्रौद्योगिकी वाणिज्यीकरण' विषय पर कार्यशाला का शुभारंभ किया गया. मुख्य वक्ता डॉ. संजीव कुमार मजूमदार, वरिष्ठ प्रबंधक एवं हेड-टेक (नए सुविधाएं), नेशनल रिसर्च डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली ने एनआरडीसी की कार्यप्रणाली बताते हुए बौद्धिक संपदा अधिकारों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला. उन्होंने विश्वविद्यालय के शोधात्मक कार्यों को समाज के अंतिम उपयोगकर्ता तक पहुँचाने के लिए वाणिज्यीकरण की प्रक्रिया भी समझाई. 'वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन' विषय पर एक क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए.

शिक्षक-मंडलीय बौद्धिक उत्पादों के संवर्धन के लिए कुलपति ने जवाहरलाल नेहरु केन्द्रीय पुस्तकालय में फैकल्टी कॉर्नर का उद्घाटन भी किया, जहाँ संकाय सदस्यों की पुस्तकें और शोध-प्रकाशन प्रदर्शित की गई. पुस्तक-पठन को बढ़ावा देने हेतु एक ओपन बुक रीडिंग कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया, इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने संबोधित करते हुए कहा कि 'पुस्तकें दूसरे संसार की खिड़की हैं. हर नए पन्ने के साथ वे हमें नई संस्कृति, नए विचार और नए लोगों से परिचित कराती हैं. सूचना-कम्युनिकेशन तकनीक के युग में पुस्तक-पठन की प्रवृत्ति घटती जा रही है, अतः हमें सभी में पुस्तक-पठन की आदत को पुनः प्रवर्तित करना चाहिए. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राओं ने आधे घंटे तक अपनी पसंदीदा पुस्तक पढ़कर पुस्तक-पठन का संदेश दिया.

न्यूक्लियर मैग्नेटिक रेजोनेंस स्पेक्ट्रोमीटर (एन एम आर) पर एक दिवसीय हैंड्सऑन प्रशिक्षण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के उन्नत अनुसंधान केंद्र (सीएआर) में न्यूक्लियर मैग्नेटिक रेजोनेंस स्पेक्ट्रोमीटर (एनएमआर) पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 35 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया. डॉ. विवेक कुमार पांडे (प्रभारी, सीएआर) ने उन्नत अनुसंधान केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी और प्रशिक्षण के लिए शुभकामनाएं दीं. व्याख्यान सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. के.के. डे (प्रभारी शिक्षक) ने प्रतिभागियों को बताया कि एनएमआर विश्लेषण एक उल्लेखनीय तकनीक है जिसका उपयोग किसी सैम्पल की शुद्धता, कंटेंट और साथ ही साथ मोलिक्यूलर संरचना के बारे में पता लगाने में, खाद्य गुणव्त्ता नियंत्रण और अनुसंधान औषधियों की खोज और विकास, आणविक गतिशीलता अध्ययन के लिए रसायन विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, जीव विज्ञान और चिकित्सा सहित विविध क्षेत्रों में किया जाता है. उन्नत

अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव के पहल पर विभिन्न उपकरणों पर विश्वविद्यालय में समय-समय पर कार्यशाला का आयोजन निरंतर किया जा रहा है.

हैंड्स ऑन सत्र श्री शिवप्रकाश सोलंकी, सौरभ साह, प्रिंस सेन और आदर्श कुमार के द्वारा एनएमआर के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ. प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की गई. डॉ. के.के. डे ने प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया एवं उनका उत्तर दिया.

प्रतिभागियों द्वारा एनएमआर पर संपूर्ण व्यावहारिक सत्र और सुरक्षा प्रोटोकॉल आदि के महत्व के बारे में बहुत ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी सीएआर तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, श्री शिवप्रकाश सोलंकी, सौरभ साह, आशीष चढ़ार, अरविंद चडार, चंद्रप्रकाश सैनी, प्रिंस सेन और आदर्श कुमार की तकनीकी देखरेख में प्रदान किया गया.

भारतीय मन, मानस और संस्कृति का पुनर्बोध विषय पर अकादमिक मंथन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के अभिमंच सभागार में चल रहे श्री धर्मपाल स्मृति द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी जो धर्मपाल शोधपीठ, स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, भोपाल द्वारा प्रायोजित था. उसके विभिन्न तकनीकी सत्रों में अनेक विषयों पर आमंत्रित विद्वानों ने अपने वक्तव्य दिये. इनमें प्रमुख थे प्रो. नन्दकिशोर आचार्य, प्रो. विजय बहादुर सिंह, श्री कुमार प्रशांत, श्री रघु ठाकुर, श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, प्रो. कन्हैया त्रिपाठी, प्रो. सत्यकेतु सांकृत, प्रो. ए.पी. मिश्रा, प्रो. बी.के. श्रीवास्तव, डॉ. मिथलेश शरण चौबे व डॉ. मिथलेश कुमार आदि.

समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने कहा कि जब हम महात्मा गांधी को याद करते हैं और किसी अच्छे विषय पर, विशेषकर स्वराज पर चर्चा करते हैं, तो हमें उनकी प्रसिद्ध पुस्तक हिंद स्वराज याद आती है. यह पुस्तक संभवतः दुनिया की सबसे छोटी, लेकिन अत्यंत प्रभावशाली पुस्तकों में से एक है. इसमें गांधीजी ने अपने अनुभवों को संवाद के रूप में प्रस्तुत किया है. गांधीजी ने बताया कि अगर हम समय की सही समझ नहीं रखते, तो स्वराज संभव नहीं है. उन्होंने यह भी कहा कि केवल अंग्रेजों के हटने से स्वराज नहीं मिलेगा, बल्कि हमें अंग्रेजियत (अर्थात उनकी सोच और जीवनशैली) को भी छोड़ना होगा. गांधीजी ने अपने विचारों में बदलाव लाते हुए यह भी माना कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति ही हमारे संविधान में स्वराज की सच्ची परिभाषा हो सकती है.

प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि हमारे देश में भोजन, स्वाद और संस्कृति में विविधता है. यही विविधता हमारे समाज की खूबसूरती है. हमारे देवी-देवताओं को ही देख लीजिए- श्रीकृष्ण, भगवान शिव, और भगवान विष्णु इन सभी का रूप व्यवहार, और खान-पान अलग-अलग है. हमारी असली ताकत हमारी विविधता में निहित एकता है. हम विचारों में एक हैं-सत्य में विश्वास रखते हैं. अहिंसा में यकीन करते हैं और कर्म को प्रधान मानते हैं. किसी इंसान की पहचान उसके पहनावे से नहीं, बल्कि उसके आचरण और मूल्यों से होती है.

प्रो. कुमार प्रशांत ने कहा कि तकनीकी एक उपकरण है, जिसका इस्तेमाल हम अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए करते हैं, लेकिन यह समझना जरूरी है कि तकनीक अपने आप में अंतिम सत्य नहीं है. उसकी वैधता और उपयोगिता को जाँचने की ज़रूरत होती है, और यह काम विज्ञान करता है. समाज को भी समय-समय पर तकनीकों की समीक्षा करनी चाहिए, और समय के अनुसार उन्हें अपनाना या बदलना चाहिए. तकनीक का कार्य पूर्व और पश्चिम को अलग करना नहीं, बल्कि जोड़ना होना चाहिए. विज्ञान और तकनीक के माध्यम से हम बीमारियों का इलाज ढूंढ सकते हैं, और ज़रूरी जिंदगी से जुड़ी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं. लेकिन यही तकनीक अगर गलत हाथों में आ जाए, तो इसका दुरुपयोग भी होता है. उदाहरण के लिए-भ्रूण लिंग की पहचान और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराइयाँ तकनीकी दुरुपयोग के ही परिणाम हैं. आज सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन में इतनी गहराई से प्रवेश कर चुकी है कि हमारे सबसे निजी क्षणों तक पर नजर रखी जा रही है. निजी अनुभव अब व्यवसायिक उत्पाद बन चुके हैं.

वक्ता डॉ. मिथिलेश ने कहा कि आज जो ज्ञान हमारे पास पहुँच रहा है, वह अधिकांशतः पश्चिमी दृष्टिकोण से प्रभावित है. आधुनिक समय में हम सबने पश्चिम की शिक्षा प्रणाली, विचारधाराओं और जीवन दृष्टिकोण को कहीं न कहीं अपनाया है या देखा है. परंतु, जब हम ज्ञान की बात करते हैं, तो यह केवल सूचना का संग्रह नहीं होता बल्कि यह आत्मिक, नैतिक और सामाजिक उन्नति का माध्यम होना चाहिए. हमारी भारतीय परंपरा में ज्ञान को शक्ति का स्रोत माना गया है. जिसके पास ज्ञान है, उसके पास परिवर्तन लाने की शक्ति है. लेकिन यह ज्ञान केवल तथ्यों का भंडार नहीं, बल्कि वह विवेक है जो समाज, प्रकृति और आत्मा से जुड़ाव उत्पन्न करता है.

डॉ कन्हैया त्रिपाठी ने कहा कि यदि हम आज भी नई सोच नहीं अपनाते, तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि हम आज भी औपनिवेशिक सोच की छाया में जी रहे हैं. उपनिवेशवाद केवल राजनीतिक नियंत्रण नहीं था, बल्कि यह एक मानसिकता थोपने की प्रक्रिया थी, जहाँ स्थानीय ज्ञान, संस्कृति और संस्थानों को तुच्छ मानकर विदेशी ढाँचों को श्रेष्ठ माना गया. आज इसकी झलक हमें हमारी शिक्षा व्यवस्था में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है. हम पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली, जो कि मूल्य-आधारित, प्रकृति-संपन्न और समग्र शिक्षा पर आधारित थी, से दूर होते जा रहे हैं. इसके बजाय हम कॉन्वेंट स्कूलों की ओर बढ़ते जा रहे हैं, जहाँ पढ़ाई का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना और नौकरी पाना बन गया है न कि आत्मविकास, सेवा या समाजोन्मुख जीवन.

प्रो. सत्यकेतु सांकृत ने कहा कि जब हम उपनिवेशीकरण की बात करते हैं, तो यह केवल भूमि पर नियंत्रण तक सीमित नहीं था, बल्कि यह हमारी सोच, संस्कृति, शिक्षा, और पहचान पर गहरी चोट करने की एक प्रक्रिया थी. इस प्रक्रिया में कई बातें लिखी और कहीं गईं, लेकिन हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण कार्य है, औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति पाना. उपनिवेशवाद के दौरान हमारे पूजास्थलों को नष्ट किया गया, हमारी संस्थाओं को कमजोर किया गया और जब देश ने राजनीतिक आज़ादी पाई, तो मानसिक गुलामी की जड़ें पहले से भी गहरी हो चुकी थीं. डॉ. भीमराव अंबेडकर इसी मानसिक गुलामी से लड़ने के लिए खड़े हुए. उन्होंने बार-बार कहा कि जब तक हम सोचने की स्वतंत्रता नहीं पाएंगे, तब तक सच्चे नागरिक नहीं बन सकते.

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिल कुमार जैन, अधिष्ठाता, शैक्षिक अध्ययनशाला, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा की गयी. इस सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. सुस्मिता लाख्यानी, अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने बनाए चित्रों के माध्यम से सारस्वत वक्तव्य दिया. विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. मनीष वर्मा, संयुक्त संचालक, लोक शिक्षण संभाग, सागर एवं प्रो. सत्यकेतु सांकृत, अधिष्ठाता, साहित्य अध्ययन केन्द्र बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली ने अपने उद्बोधन दिये. डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया. डॉ.

अर्चना वर्मा ने संगोष्ठी प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. डॉ. योगेश कुमार पाल, शिक्षा विभाग द्वारा आभार ज्ञापन किया गया. सत्र का संचालन डॉ. किरण आर्य, सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग द्वारा किया गया.

इस संगोष्ठी के आयोजक विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग और जीवनपर्यन्त शिक्षा विभाग थे. इसके संयोजक डॉ. अनिल कुमार तिवारी तथा सुश्री अदिति गौर, सहायक संचालक, स्वराज संस्थान संचालनालय, भोपाल थे. समन्वयक डॉ. संजय शर्मा, सहायक आचार्य, जीवनपर्यन्त शिक्षा विभाग थे. आयोजन सचिव डॉ. योगेश पाल व डॉ. अर्चना वर्मा थे.

संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक व शोधार्थियों के साथ-साथ सागर संभाग के विभिन्न संदीपनी विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय एवं अन्य विद्यालय तथा महाविद्यालय और डायट से प्रधानाचार्य, उप-प्रधानाचार्य, मास्टर ट्रेनर्स, अध्यापक व विद्यार्थी शामिल हुए. इस संगोष्ठी में लगभग 400 लोगों ने अपनी सक्रिय सहभागिता की.

बीपीईएस के छात्र/छात्राओं के मध्य इंट्राम्यूरल टेबल टेनिस कम्पटीशन का शुभारंभ

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर शारीरिक शिक्षा विभाग के तत्वावधान में बीपीईएस के छात्र/छात्राओं के सुभाष हाउस एवं पटेल हाउस के मध्य इंट्राम्यूरल टेबल टेनिस कम्पटीशन का शुभारंभ प्रो. अजीत जायसवाल डायरेक्टर ऑफ़ फैकल्टी अफेयर्स के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ. कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक शारीरिक शिक्षा विभाग डॉ. विवेक बी. साठे ने की. इंट्राम्यूरल कम्पटीशन की सम्पूर्ण जानकारी इंट्राम्यूरल के डायरेक्टर महेंद्र कुमार ने दी. प्रो. अजीत जायसवाल ने पटेल हाउस एवं सुभाष हाउस के सभी खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उन्हें अनुशासन में रहकर कड़ी मेहनत करने की सलाह दी. उन्होंने कहा कि शारीरिक शिक्षा एवं खेल के माध्यम से ही शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास के साथ सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास संभव है. अंत में उन्होंने दोनों हाउस के खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी. कार्यक्रम का संचालन बीपीईएस की छात्रा मुस्कान जड़िया ने किया एवं आभार इंट्राम्यूरल के सह सचिव शतायु लोधी ने माना.इंट्राम्यूरल कम्पटीशन के पहले राउंड में सुभाष हाउस ने जीत अर्जित कर बढ़त बना ली है. अगले शुक्रवार को दूसरे राउंड के मैच खेले जावेंगे. आज हुए मैचों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों मेघा सोर, मोनेन्द्र एवं आदित्य सिंह राजपूत का सम्मान निदेशक शारीरिक शिक्षा विभाग डॉ. विवेक बी. साठे द्वारा किया और और उन्हें शुभकामनाएँ दी. मैच के निर्णायक विनय शुक्ला, उन्नति सेन, नरेंद्र उइके रहे.

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर 'लाईब्रेरी वेब पेज ऐप' विषय पर डिजाइनिंग प्रतियोगिता आयोजित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग ने विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस के उपलक्ष्य में 'लाईब्रेरी वेब पेज ऐप' विषय पर डिजाइनिंग प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया. प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्रों को लाईब्रेरी वेब पेज या मोबाइल एप्लिकेशन के लिए अभिनय, उपयोगकर्ता केन्द्रित इंटरफेस

डिजाइन करने के लिए आमंत्रित करके उनमें रचनात्मकता को बढ़ावा देना और कोडिंग दक्षता को बढ़ाना था. यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के संरक्षण में किया गया. यह प्रतियोगिता विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के लिए आयोजित की गई थी. इस प्रतियोगिता में कम्प्यूटर साइंस एवं एप्लीकेशन, आई.ओ.ईटी. इंजीनियरिंग, लॉ विभाग के विभिन्न प्रतिभागियों ने लाईब्रेरी प्रबंधन प्रणालियों के संदर्भ में पहुँच, उपयोगकर्ता अनुभव और तकनीकी उन्नति पर केन्द्रित इंटरेक्टिव डिजाइन ले-आउट, अभिनय फीचर प्रस्तावों और प्रस्तुतियों के माध्यम से उत्साहपूर्वक अपने विचारों का प्रदर्शन किया. प्रविष्टियों का मूल्यांकन रचनात्मकता, उपयोगिता और तकनीकी अंतर्दृष्टि जैसे मापदण्डो पर किया गया. निर्णायक मंडल में डॉ. मोहन टी.ए. लाईब्रेरियन, डॉ. अनुराग श्रीवास्तव डिप्टी लाईब्रेरियन और डॉ. अभिषेक बंसल, विभागाध्यक्ष कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग शामिल रहे.

इस प्रतियोगिता के विजेता के रूप में श्री राहुल आर्यन तिवारी (एमसीए, द्वितीय सेमेस्टर) ने प्रथम पुरुस्कार, श्री सत्यम प्रकाश (बीसीए, चतुर्थ सेमेस्टर) ने द्वितीय पुरुस्कार एवं श्री तनिष्क रजक (बीसीए, चतुर्थ सेमेस्टर) ने तृतीय पुरुस्कार प्राप्त किया. सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए और उनके अभिनव योगदान के लिए उनकी सराहना की गई.

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विभाग के शिक्षकों डॉ. रंजीत रजक, श्री कमल कान्त, डॉ. कविता साहू एवं डॉ. पी.एस. सिंह ने लाईब्रेरी वेब पेज या मोबाइल एप्लिकेशन निर्माण में छात्रों को सहयोग प्रदान किया. इस तरह के कार्यक्रम शैक्षणिक पुस्तकालयों में सुलभ और कुशल सूचना प्रणालियों के महत्व पर जोर देते हुए प्रौद्योगिकी और डिजाइन बनाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है.

श्रमिकों के कल्याण के लिए डॉक्टर अंबेडकर ने कार्य किया

डॉक्टर बी. आर. अंबेडकर ने कोलंबिया यूनिवर्सिटी में रिसर्च के दौरान एक थीसिस लिखी नेशनल डिविडेंड ऑफ़ इंडिया जो 1924 में प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने फाइनेंस कमीशन की स्थापना की बात की थी. उक्त विचार डॉक्टर अंबेडकर चेयर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित डॉक्टर अंबेडकर मेमोरियल लेक्चर का विषय 'डॉक्टर बी. आर. अंबेडकर का आर्थिक चिंतन' पर संबोधित करते हुए अर्थशास्त्र विभाग के प्रो. उत्सव आनंद ने कहा

कि डॉ. अंबेडकर का चिंतन श्रमिकों के हित के लिए था. श्रमिकों के कल्याण के लिए श्रमिक एवं मालिक एक साथ बैठकर समस्या का समाधान करें जिससे उद्योग का विकास हो सके. उक्त अवसर पर डॉ. देवेंद्र कुमार ने कहा कि अंबेडकर के आर्थिक चिंतन के माध्यम से ही हम विकसित भारत 2047 बना सकते हैं. उनकी आर्थिक नीति जो मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास, जन-धन योजना, सबका साथ और सबका विकास आज यह संभव वर्तमान सरकार के माध्यम से हो रहा है. डॉ देवेंद्र कुमार ने कहा कि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के प्रयासों से अंबेडकर चेयर की स्थापना विश्वविद्यालय में हुई और डॉक्टर अंबेडकर के विचार आगे बढ़ाने का कार्य डॉक्टर अंबेडकर चेयर कर रहा है. उक्त अवसर पर एडल्ट एजुकेशन के सहायक अध्यापक डॉक्टर चिट्टी बाबू ने प्रो. उत्सव आनंद का स्वागत किया. डॉ. वीरेंद्र, डॉ अभय कुमार, अजब सिंह, जितेंद्र, हिमांशु, बालचंद, अभिषेक अहिरवार, आशीष, मनीष कुमार विशाल सूर्यवंशी आदि कार्यक्रम में उपस्थित थे.

--//--

दैनिक भास्कर

सागर

रंगमंच : डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में सागर रंग महोत्सव 2025 की चौथी प्रस्तुति, नाटक इश्किया‍पा का मंचन आज

सामयिक बने रहने वाले दिशाहीन उन्मुक्त युवा जीवन के रंग और त्रासदी की कहानी है होली

सूर्यकांत पाठक
वरिष्ठ पत्रकार और कला समीक्षक

आम छात्रों के मनोविज्ञान का सटीक चित्रण

सागर | महेश एलकुंचवार का नाटक होली बेचैन, निराशा और दिशाहीनता से ग्रस्त उन युवाओं की कहानी है, जिनकी कुंठाएं अलग-अलग तरीके से व्यक्त होती हैं। इसमें उच्च शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों और उनका भविष्य गढ़ने वाले शिक्षक वर्ग के बीच द्वंद के हालात बहुत गहराई से सामने लाए गए हैं। नाटक में छात्र अपने अंदर खुद से संघर्ष करते हुए दिखते हैं। परिणति में नाटक का अंत भीषण त्रासदी के रूप में सामने आता है। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद और युवाचेतना थिएटर ग्रुप की ओर से आयोजित पहले से ... की चौथी प्रस्तुति ... आकाश विश्वकर्मा ... में अगली प्रस्तुति ... नाटक इश्किया‍पा ... में होगा।

नाटक की शुरुआत एक हिंदी फिल्म के गीत से होती है, जिस पर कॉलेज छात्र-छात्राओं का समूह नाचता है। इसके बाद एक टेबल पर अव्यवस्थित पड़े, हैंगओवर और नींद में डूबे दो छात्र नजर आते हैं। कुछ छात्र उन्हें आकर जगाते हैं और उनके बीच नोकझोंक शुरू हो जाती है। वे मस्ती करते हैं, एक-दूसरे को परेशान करते हैं और उनमें से एक यह इत्तला देता है कि प्रिंसिपल होली पर कॉलेज में छुट्टी नहीं दे रहे हैं। इस पर छात्र भड़क जाते हैं और प्रिंसिपल का मजा चखाने ...

रहने वाले अलमस्त विद्यार्थियों के बीच नोकझोंक के कई प्रसंग ...

हॉस्टल वार्डन मौजूद होते हैं। इसमें विद्यार्थी पहले समारोह के मध्य अतिथि का मजाक उड़ाते हैं

मांगते हैं। लेकिन वार्डन बहाना बनाकर टाल जाते हैं। इसके बाद विद्यार्थी आनंद चुपके से आकर विद्यार्थियों के नाम प्रिंसिपल को बता देता है। प्रिंसिपल कुछ विद्यार्थियों को रेस्टिकेट कर देते हैं और कुछ के परीक्षा देने पर रोक लगा देते हैं। ...

निशब्द कर देने वाला ...

नाटक के विभिन्न ... कॉमन रूम ... समाप्ति ...

सेहत

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में वरिष्ठ नागरिकों के लिए दो दिवसीय राज्य स्तरीय सम्मेलन किया गया

योग हमारी दिनचर्या का नियमित हिस्सा बनें : योगगुरु

... नागरिकों के लिए दो दिवसीय राज्य स्तरीय सम्मेलन का ... लगाया। डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज ने ... कि उम्र महज एक अंक है। हम ... में बदलाव लाकर अपने ... सुधार ला सकते हैं। ... समस्याओं ... चाहिए ...

शोधार्थी साक्षी गौतम को प्रथम पुरस्कार मनोहर चौधरी को मिली फेलोशिप

उज्जैन में 'विक्रमोत्सव' राष्ट्रीय युवा वैज्ञानिक सम्मेलन में की गई घोषणा

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के गणित एवं सांख्यिकी विभाग की शोध छात्रा साक्षी गौतम को एमपी युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2025 का प्रथम पुरस्कार मिला है। विक्रमोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय युवा वैज्ञानिक सम्मेलन, विज्ञान उत्सव और 40वां मध्यप्रदेश युवा वैज्ञानिक सम्मेलन, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में मप्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में इस युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में साक्षी गौतम को उनके शोध पत्र "द्विघात स्थिरता फ्रंक्शन के साथ नॉर्डसीक जनरल रैखिक विधि के नए वर्ग" के उत्कृष्ट मौखिक वाचन के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2025 के लिए गणित विषय में प्रथम पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। ... गौतम वर्तमान में गणित विभाग ... सहायक प्राध्यापक आर के पांडेय के निर्देशन में कठोर अवकल समीकरण ...

सम्मेलन में विधि की साक्षा ...

एंटीबायोटिक को अधिक प्रभावी बनाएगा सागर का स्व-संवेदनशील नैनोस्ट्रक्चर

डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किया विकसित, शरीर में फैलने की वजह सीधे संक्रमित जगह पर पहुंचेगी दवा

... की प्रयोगशाला में नैनो तकनीक पर काम करते शोधार्थी। - नवदुनिया

राजभाषा कार्यान्वयन के नवाचार अनुकरणीय, देश के अन्य विवि कर रहे अनुसरण: डॉ. सर्मा

भास्कर संवाददाता | सागर

केंद्रीय विश्वविद्यालयों के प्रशासनिक कामकाज में हिंदी की ... की निगरानी के लिए यूजीसी, ... मंत्रालय, भारत सरकार की ... समिति ने डॉ. हरीसिंह ... विद्यालय में निरीक्षण ... में विश्वविद्यालय ... उप सचिव डॉ. ... एवं शिक्षा ... कुमार वर्मा ... ने ... प्रकोष्ठ ... के ... नवीन ... विभिन्न ... में राजभाषा ... की। समिति के सदस्यों के विशिष्ट आतिथ्य में प्रभारी कुलपति प्रो. वायएस ठाकुर की अध्यक्षता में विश्वविद्यालयी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 48वीं तिमाही बैठक हुई। डॉ. सर्मा ने कहा प्रेरणा, प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन की नीति का पालन करते हुए विश्वविद्यालय में ... स्थित है इसलिए वार्षिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शतप्रतिशत मूल पत्राचार हिंदी में किया जाना आवश्यक है। उन्होंने राजभाषा प्रकोष्ठ एवं विश्वविद्यालय के अन्य विभागों द्वारा किए जा रहे प्रकाशनों तथा विश्वविद्यालय में लागू ...

विकसित भारत–स्वर्णिम भारत की दिशा में कार्य करना है : कुलपति

डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में 'बेहतर भविष्य की ओर' विषय पर केंद्रित संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर: डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के गौर समिति कक्ष में 'बेहतर भविष्य की ओर' विषय पर केंद्रित संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ... मुख्य अतिथि गुरु ...

... के साथ कैसे पढ़ाई जारी रख सकें इसके लिए सभी संस्थानों को प्रयास करना चाहिए। ... निदेशक प्रो. नवीन कानगो ने विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन की रणनीतियों ... और विद्यार्थियों से सदन को अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि के रूप में ... पूर्व कुलसचिव डा. रेखा कालिया भारद्वाज मौजूद थीं। ...

नईदुनिया, 02 अप्रैल 2025

शोधार्थी साक्षी गौतम को मप्र युवा वैज्ञानिक सम्मेलन में प्रथम पुरस्कार, मनोहर चौधरी को युवा वैज्ञानिक फेलोशिप

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के गणित एवं सांख्यिकी विभाग की शोध छात्रा सुश्री साक्षी गौतम को एम.पी. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2025 का प्रथम पुरस्कार मिला है. विक्रमोत्सव के अंतर्गत 27 से 29 मार्च तक राष्ट्रीय युवा वैज्ञानिक सम्मेलन, विज्ञान उत्सव और 40वां मध्यप्रदेश युवा वैज्ञानिक सम्मेलन, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में मप्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के तत्वावधान में आयोजित किया गया. इस सम्मलेन में इस युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में साक्षी गौतम को उनके शोध पत्र द्विघात स्थिरता फंक्शन के साथ नॉर्डसीक जनरल रैखिक विधि के नए वर्ग के उत्कृष्ट मौखिक वाचन के लिए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2025 के लिए गणित विषय में प्रथम पुरस्कार के लिए चयनित किया गया. साक्षी गौतम वर्तमान में गणित विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. आर के पांडेय के निर्देशन में कठोर अवकल समीकरण के लिए ...

के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रतिभागियों ने सहभागिता की थी. इस पुरुस्कार स्वरुप साक्षी गौतम को 25000 रुपये एवं प्रशस्ति पत्र, मुख्य अथिति डॉ. अनिल कोठारी महानिदेशक, म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद एवं प्रो अर्पण भारद्वाज, कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया गया. इसी सम्मेलन में गणित विभाग के ही शोधार्थी मनोहर चौधरी को उनके शोध पत्र के लिए, प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा युवा वैज्ञानिक फैलोशिप भी प्रदान की गई. साक्षी और मनोहर की इस उपलब्धि पर गणित विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो आर के गंगेले ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह उपलब्धि गणित विभाग के शोधार्थियों के लिए प्रेरणा का संचार करेगी. विश्वविद्यालय की ...

दैनिक भास्कर, सागर, बुधवार, 2 अप्रैल, 2025 | 4

इगग्प्प हेगड़े का विवाह • डॉ हरीसिंह गौर विवि में 'सागर रंग महोत्सव 2025' की पांचवीं प्रस्तुति, आज अल्ताफ मुलाणी के निर्देशन में 'जानेमन' का प्रदर्शन

नारी शोषण के गंभीर विषय पर नाट्य प्रदर्शन के बीच 'कॉमिक रिलीफ' देने वाला हास्य

सूर्यकांत पाठक
वरिष्ठ पत्रकार और कला समीक्षक

सागर| शादी के नाम पर गरीब परिवारों की लड़कियों की खरीद-फरोख्त (जिसे मानव तस्करी ही कहा जाएगा) और बाल विवाह जैसी कुरीतियां सामाजिक व्यवस्था पर काले धब्बे की तरह हैं। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के शोषण की प्रवृत्ति को केंद्र में रखकर लिखे गए कन्नड़ नाटक 'इगग्प्प हेगड़े का विवाह' के हिंदी अनुवाद की ... गौर ...

नाटक की शुरुआत कटघरे में खड़ी नायिका सावित्री (रितिका सेन) के रुदन के साथ होती है। वह अपना बचपन याद करती है। इसके साथ मंच के दूसरे कोने पर फ्लैश बैक शुरू हो जाता है, जिसमें एक 13 साल की बच्ची अपनी मां कावेरी (आयुषी चौरसिया) से बातचीत करते हुए खेल रही है। इसी बीच बच्ची का पिता वहां पहुंचकर उसे डांटता है और उसका खेल बंद करा देता है।

दूसरी तरफ 60 वर्षीय वृद्ध इगग्प्प हेगड़े (आनंद अग्रवाल) के पास वासप्प (विवेकानंद सोनी) और गणेश (आयुष पुराणी) पहुंचते हैं। इगग्प्प की एक के बाद एक दो पत्नियों की मौत हो चुकी है। वासप्प और गणेश उसे तीसरी शादी करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे दोनों उससे कहते हैं कि शादी करने के लिए लड़की के परिवार को और कुंडली मिलाने वाले को भी अपने पक्ष में करने के लिए पैसे देने पड़ेंगे। इस पर इगग्प्प के मन में लड्डू फूटने लगते हैं ...

वह तैयार हो जाता है। वासप्प और गणेश वधु के पिता को बताते हैं कि इगग्प्प बूढ़ा और बीमार है कुछ ही दिन में मर जाएगा, उसके बाद उसकी पूरी संपत्ति तुम्हारी हो जाएगी। इगग्प्प शादी के लिए पैसे जुटाने के ... अपनी जमीन गिरवी ...

बाद बीमार इगग्प्प बिस्तर पर पड़ जाता है। वह सावित्री से बुरा व्यवहार करता है। दूसरी ओर सावित्री और वासप्प में अवैध संबंध बन जाते हैं। ... चलने के ...

अपने अस्तित्व को लेकर ... करती है। ...

जुल्म सहने वाली स्त्री ही कटघरे में

कुछ दृश्य विशेष रूप से प्रभावी बने, जैसे इगग्प्प का वर के रूप में वासप्प की पीठ पर बैठकर आना, अंतिम यात्रा में मुर्दे का खुद उठकर चल पड़ना। मूल नाटक चूंकि कर्नाटक की पृष्ठभूमि का है इसलिए वेशभूषा उसी के अनुरूप थी। हालांकि संगीत उत्तर भारतीय था। विवाह गीत बुंदेलखंड का ही प्रयुक्त किया गया। ...

विवि के वैली कैंपस में बनेगा प्रवेश द्वार

सागर @ पत्रिका.. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के वैली कैंपस में प्रवेश द्वार बनाया जाएगा। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भूमि पूजन कर प्रवेश द्वार निर्माण कार्य का शुभारम्भ किया। ग्राम पथरिया जाट स्थित वैली कैंपस में विश्वविद्यालय के विभिन्न अकादमिक भवनों का निर्माण कर परिसर को विस्तारित किया जा रहा है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विद्यार्थियों, भवनों एवं परिसर की सुरक्षा की दृष्टि से प्रवेश द्वार का निर्माण काफी समय से प्रतीक्षित था जिसका कार्य अब शुरू हो जाएगा और शीघ्र ही भव्य प्रवेश द्वार बनकर तैयार होगा। उन्होंने कहा कि निकट भविष्य में वैली परिसर में कई अन्य नवीन अकादमिक भवनों, कन्वेंशन सेंटर व छात्रावास इत्यादि का निर्माण प्रस्तावित है। औपचारिक स्वीकृति के बाद परिसर को और अधिक विस्तारित किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के वैली कैंपस के प्रवेश द्वार निर्माण का कुलपति ने किया भूमिपूजन

सागर (आरएनएन)। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के वैली कैंपस में भव्य प्रवेश द्वारा बनेगा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने भूमि पूजन कर प्रवेश द्वार निर्माण कार्य का शुभारम्भ किया। गौरतलब है कि ग्राम पथरिया जाट स्थित वैली कैंपस में विश्वविद्यालय के विभिन्न अकादमिक भवनों का निर्माण कर परिसर को विस्तारित किया जा रहा है। इस अवसर पर कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विद्यार्थियों, भवनों एवं परिसर की सुरक्षा की दृष्टि से प्रवेश द्वार का निर्माण काफी समय से प्रतीक्षित था। जिसका कार्य अब शुरू हो जाएगा और शीघ्र ही भव्य प्रवेश द्वार बनकर तैयार होगा। उन्होंने कहा कि निकट भविष्य में वैली परिसर में कई अन्य नवीन अकादमिक भवनों, कन्वेंशन सेंटर, छात्रावास इत्यादि का निर्माण प्रस्तावित है। औपचारिक स्वीकृति के बाद परिसर को और अधिक विस्तारित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में कई नवीन पाठ्यक्रमों के संचालन और कई नई इकाईयों और प्रकोष्ठों के स्थापित होने विद्यार्थियों को आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ अध्ययन-अध्यापन इत्यादि उद्देश्य से परिसर का विस्तार आवश्यक है। उन्होंने नेपाल पैलेस परिसर में नवीन वॉटर टैंक निर्माण की भी आधार शिला रखी।

कुलपति ने नवनिर्मित भवनों का किया निरीक्षण : कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय में नवनिर्मित अंग्रेजी विभाग के विस्तारित भवन, एकीकृत विज्ञान प्रयोगशाला, फार्मेसी विभाग के विस्तारित भवन के निरीक्षण के साथ ही संचार एवं पत्रकारिता, स्वदेशी ज्ञान अध्ययन केंद्र एवं पर्यावरण विज्ञान के नवीन भवन का निरीक्षण किया और प्रगति की समीक्षा की। ये सभी भवन बनकर तैयार हैं। फर्नीचर एवं तकनीकी उपलब्धता कार्य प्रगति पर हैं और ये सभी भवन बहुत जल्द ही विद्यार्थियों के उपयोग में आने लगेंगे। इस दौरान विवि के छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो डीके नेमा, प्रभारी कुलसचिव डॉ एसपी उपाध्याय, सुरक्षा अधिकारी प्रो राजेन्द्र यादव, प्रो रणवीर कुमार, प्रो श्वेता यादव, प्रो केकेएन शर्मा, प्रो यूके पाटिल, प्रो एमएल खान, प्रो कालीनाथ झा, डॉ अभिषेक बंसल, समर्थ दीक्षित आदि उपस्थित थे।

नवनिर्मित भवनों का निरीक्षण

नवभारत न्यूज

सागर 2 अप्रैल. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में नवनिर्मित अंग्रेजी विभाग के विस्तारित भवन, एकीकृत विज्ञान प्रयोगशाला, फार्मेसी विभ... के विस्तारित भवन के नि... के साथ ही संचार पत्रकारिता, स्वदेशी ज्ञा... अध्ययन केंद्र एवं पर्यावरण विज्ञान के नवीन भवन का निरीक्षण कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ...

ये सभी भ... फर्नीचर ... कार्...

विश्वविद्यालयः डॉ. साक्षी सोनी को मिला युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

दबंग बुन्देलखण्ड

... डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, ... भैषजिक विज्ञान विभाग की पूर्व ... डॉ. साक्षी सोनी को प्रतिष्ठित युवा ... पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। ... उन्हें विक्रम विश्वविद्यालय, ... 27 से 29 मार्च 2025 तक ... 0वीं युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में ... गा। वर्तमान में डॉ. साक्षी सोनी ... य शिक्षा और अनुसंधान ... बाद में अनुसंधान सहयोगी ... हैं। उन्होंने अपनी पीएच.डी. ... भैषजिक विज्ञान विभाग से ...

... र उनके शोध विषय टार्गेटेड डिलीवरी ऑफ डॉक्सोरूबिसिन ... ज़ंग सीपीपी-कंजुगेटेड लिपोसोम्स पर उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रदान ... पर विक्रम विश्ववि... उज्जैन के कुलपति तथा म.प्र. ... षद, भोपा... क ने उन्हें सम्मानित किया। डॉ. ... ल के. कशाव के निर्देशन में ... भार व्यक्त करते हुए इसका ... ग के समस्त शिक्षकों तथा ... को दिया।

विवि में हिंदी कार्यशाला का हुआ आयोजन

... का. डॉ. हरीसिंह गौर ... राजभाषा प्रकोष्ठ ... ी कार्यशाला ... है। ... में ...

का समुचित उपयोग तभी संभव है जब हम हिन्दी प्रयोग को लेकर अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त हो जाते हैं। जब हमारे अधिकारीगण सहज-भाव से अपने कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करते है तो अधीनस्थ कार्मिक स्वतः ही हिन्दी में कार्य के लिए प्रेरित होते हैं। कार्यशाला में डॉ. किरण माहेश्वरी, डॉ. भूपेन्द्र पटेल ...

सागर रंग महोत्सव में कलाकारों ने की इश्कियापा एवं जानेमन की नाट्य प्रस्तुति

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद और युगसृष्टि थियेटर ग्रुप सागर के संयुक्त तत्वावधान में विवि के प्रदर्शनकारी कला विभाग में 27 मार्च से 3 अप्रैल तक चल रहे आठ दिवसीय प्रथम सागर रंग महोत्सव 2025 में इश्कियापा एवं जानेमन की नाट्य की प्रस्तुति हुई। इश्कियापा की कहानी मूल रूप से एक स्टूडियो पर आधारित है जिसमें कुछ लोग एक छोटे शहर में मुम्बई से फिल्म बनाने आते हैं। वे छोटे शहर के अमीर लोगों को फिल्म के जाल में फंसा लेते हैं। जब इनका पर्दाफाश होता है उन्हें फिल्म को किसी भी हालत में पूरा करने के लिये स्टूडियों में हड़बड़ी मच जाती है कि फिल्म की कोई कहानी तो है नही। कहानी न होने के चक्कर में एक दूसरे को कहानी बनाने ... और ... है। ...

और 50 एवं 60 के दशक के समय और तत्कालीन हिन्दी फिल्मी पृष्ठभूमि पर आधारित है। मच्छिन्द्र मोरे द्वारा लिखित जानेमन किन्नर समाज के संघर्ष, प्रेम और स्वीकृति की कहानी है। यह उपेक्षित किन्नर समुदाय के वास्तविक जीवन और उनकी ...

है। नाटक ... आत्मसम्मान ... से प्रस्तुत किया ग... सच्चाइयों के बीच ... गरिमा और आत्मसम्मान क...

दैनिक भास्कर, सागर, शुक्रवार, 4 अप्रैल, 2025 | 4

नाट्य समीक्षा : डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में 'सागर रंग महोत्सव 2025' की सातवीं प्रस्तुति

'जानेमन' में किन्नरों के जीवन की जटिलताओं और संघर्षों की अनकही कहानी

सूर्यकांत पाठक, वरिष्ठ पत्रकार और कला समीक्षक

सशक्त कथानक, प्रभावी प्रस्तुति

विश्वविद्यालयः ईएमएमआरसी द्वारा निर्मित फिल्म 'संचार के सिद्धांत' ने जीता अखिल भारतीय पुरस्...

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के शैक्षिक मीडिया अनुसंधान केंद्र (ईएमएमआरसी) के द्वारा निर्मित फिल्म 'संचार के सिद्धांत' को 'बेस्ट स्क्रिप्ट राइटिंग अवार्ड' से सम्मानित किया गया। गौरतलब है कि अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-कंटेंट प्रतियोगिता 2024-25 का तीन दिवसीय कार्यक्रम 26 से 28 मार्च तक उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एनसीईआरटी, उमियाम, मेघालय में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में अखिल भारतीय स्तर पर 800 से अधिक ऑडियो-वीडियो कार्यक्रमों में से चयनित उत्कृष्ट कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया, जिसके पश्चात विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। विश्वविद्यालय के ईएमआरसी केंद्र की ओर से इस आयोजन में फिल्म के निर्माता, प्रोडक्शन असिस्टेंट धीरज सनमोरिया ने कार्यक्रम में भाग लिया. सीआईईटी, एनसीईआरटी के संयुक्त निदेशक प्रोफेसर अमरेंद्र बेहरा ने प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं ट्रॉफी प्रदान किया.

इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. ... ईएम... कहा... रचन... के ... उपल... इसे ... निदेश...

यह कार्यक्रम 'संचार के सिद्धांत' जनसंपर्क और पत्रकारिता के छात्रों के लिए विशेष रूप से बनाया गया है। इसकी स्क्रिप्ट राइटिंग, निर्देशन, संपादन और प्रस्तुतिकरण का कार्य धीरज सनमोरिया ने किया है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के ...

सागर ने कुल चार प्रविष्टियाँ भेजी थीं। इनमें 'संचार के सिद्धांत' के अलावा गुलज़ार के जीवन पर आधारित 'जज़्बात का चितेरा-गुलज़ार', स्टूडियो आधारित क्लास लेक्चर 'मारे ...

विवि में दिव्यांग विद्यार्थियों को सभी सुविधाएं हो रहीं उपलब्ध

... सागर द्वारा ट्राइसाइकिल प्राप्त हुई। ... प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विद्यार्थी ... में बिठाकर ...

भोपाल, शनिवार 05 अप्रैल 2025 जन जन जागरण

दिव्यांग विद्यार्थियों की दिव्यता राष्ट्र की अनमोल धरोहर हैः प्रो. नीलिमा गुप्ता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों प्रकोष्ठ (एस.ई.डी.जी.सेल) की ओर से विश्वविद्यालय में अध्ययनरत दिव्यांग विद्यार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली योजनाओं से अवगत कराया गया. इस योजना के तहत विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग में अध्ययनरत विद्यार्थी विष्णु प्रसाद डांगी को जिला दिव्यांग पुर्नवास केन्द्र सागर द्वारा ट्राइसाइकिल प्राप्त हुई. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विद्यार्थी को स्वयं ट्राइसाइकिल में बिठाकर हरी झंडी दिखाते हुए रवाना किया. इस अवसर पर कुलपति ने अपने

उद्बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय में पढने वाले दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए लगातार तमाम सुविधाएं मुहैया कराई जा रही हैं. कुलपति ने प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि सरकार द्वारा दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा प्रदान की जाने वाली जितनी भी सहायक सामग्री उपलब्ध कराई जाती है उन्हें विश्वविद्यालय में पढने वाले दिव्यांग विद्यार्थियों को उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु हर संभव सहयोग एवं कार्रवाई की जाए. उन्होंने अगले चरण में भी ऐसे दिव्यांग विद्यार्थियों को सहायक सामग्री उपलब्ध कराने संबंधी दिशा-निर्देश दिए ताकि ज्यादा से ज्यादा संसाधन विद्यार्थियों को मिल सके. उन्होंने कहा कि दिव्यांग अद्भुत प्रतिभा के धनी होते हैं. इनकी दिव्यता को यदि उचित अवसर प्रदान किया जाए तो ये राष्ट्र के लिए उपयोगी मानव शक्ति के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे. इसी उद्देश्य से विश्वविद्यालय का एस.ई.डी.जी. प्रकोष्ठ इन विद्यार्थियों के बहुआयामी पक्षों को विकसित करने के अवसर प्रदान कर रहा है. इस अवसर पर एस.ई.डी.जी. प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन, निदेशक अकादमिक गतिविधियां प्रो. नवीन कानगो, कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. मोहन टी.ए., मीडिया प्रभारी डॉ. विवेक जायसवाल एवं अन्य दिव्यांग विद्यार्थी तथा विश्वविद्यालय के पदाधिकारी उपस्थित रहे. कार्यक्रम के अंत में एस.ई.डी.जी. प्रकोष्ठ के सदस्य डॉ. नवीन सिंह द्वारा आभार व्यक्त किया।

अंतरराष्ट्रीय ऑटिज्म जागरूकता दिवस मनाया

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के मनोविज्ञान विभाग में अंतरराष्ट्रीय ऑटिज्म जागरूकता दिवस मनाया गया। आयोजन का उद्देश्य समाज में ऑटिज़्म के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। ऑटिज्म मानव मस्तिष्क से जुड़ा हुआ विकार है, जो व्यक्ति को सामाजिक व्यवहार, संचार क्षमता और दोहराव वाली गतिविधियों को प्रभावित करता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अधिष्ठाता मानविकी एवं सामाजिक संकाय प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि ऑटिज्म के लक्षण बचपन में ही दिखने लगते हैं लेकिन यह हर व्यक्ति में अलग अलग हो सकते हैं। छात्र-छात्राओं द्वारा नुक्कड़ नाटक एवं कविता... के प्रति जागरूकता का संदेश दिया गया। डायरेक्टरेट ऑफ एजुकेशन दिल्ली से प्रवीन ... ज्ञान तथा अनुभव को छात्र-छात्राओं के ...

ऑटिज्म मानव मस्तिष्क से जुड़ा हुआ विकार है

विवि के मनोविज्ञान विभाग में मनाया अंतरराष्ट्रीय ऑटिज्म जागरूकता दिवस

सागर। विवि में ऑटिज्म के संबंध में जानकारी देते हुए विद्यार्थी। • बदपुीया

नाट्य समीक्षा: गिरीश कर्नाड के चर्चित नाटक के मंचन के साथ डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में आठ दिवसीय सागर रंग महोत्सव का समापन

हयवदन: पूर्णता की तलाश में चलने वाले अंतर्द्वंद की सशक्त रंग प्रस्तुति

सूर्यकांत पाठक
वरिष्ठ पत्रकार और कला समीक्षक

सागर। क्या कोई भी इंसान संपूर्ण होता है? क्या किसी भी एक मानव में दुनिया की वे सारी खासियतें मौजूद हो सकती हैं जिनकी कल्पना की जा सकती है? यह एक द्वंद है। गिरीश कर्नाड का प्रसिद्ध नाटक 'हयवदन' मानव दुविधा के इसी विषय पर केंद्रित है। ...

... के लिखे ओपेरा 'द ट्रांसपोज्ड हेडस' की कहानी को आधार बनाकर रचा गया है। बुंदेली में अनुदित नाटक का निर्देशन मधुसूदन पांडेय और मयंक विश्वकर्मा ने किया। मयंक इस नाटक के पात्र भागवत (सूत्रधार) की भूमिका में भी थे। 'हयवदन' का अर्थ है घोड़े के सिर वाला आदमी। ...

हैं। यह एक प्रेम त्रिकोण है जिसके मध्य में पद्मिनी है। देवदत्त एक ज्ञानी कवि है। उसको पद्मिनी से प्यार हो जाता है। वह अपने परम मित्र कपिल की मदद से पद्मिनी को जीवनसाथी के रूप में पाने में सफल हो जाता है। हालांकि पद्मिनी में अच्छे शरीर सौष्ठव वाले कपिल के प्रति भी आकर्षण होता है। ...

है। सुंदर पत्नी और सबसे प्रिय मित्र के बीच देवदत्त दुविधा में है। वह देवी मंदिर में जाकर अपना सिर काट लेता है। कपिल भी मित्र के बिछोह में अपना सिर काट लेता है। दुख में डूबी पद्मिनी भी अपनी जान देना चाहती है, लेकिन उसी समय ...

धड़ से जोड़ देती है। इसके बाद सवाल यह उठता है कि देवदत्त कौन है और कपिल कौन? एक पुरुष की पहचान उसके सिर से होगी या शरीर से? दुविधा यह भी है कि यदि कोई प्यार करता है, तो वह अपने प्रेमी के दिमाग से प्यार करता है या उसके दिल से? कपिल और देवदत्त के बीच पद्मिनी पर अधिकार को लेकर विवाद होता है। आखिरकार विक्रमादित्य के एक ... उद्धृत करते हुए तय होता है ... व्यक्ति की असली पहचान ... अन्य अंग नहीं। ...

असंगतता को प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट ... यह एक संगीत नाटक है ... शास्त्रीय परंपरा के ... हुई। नाटक का ...

पुराने कपड़ों, लकड़ियों और घासफूस से तैयार किया आकर्षक मंच

भास्कर खास

विवि में विद्यार्थियों ने कबाड़ से बनाया थिएटर, काकभगोड़ा, कुआं व झोपड़ी, यहीं हो रहे मंचन

भास्कर संवाददाता | सागर

... गौर विश्वविद्यालय के ... विद्यार्थियों ने ... तैयार ...

आने देने के लिए लगाए जाते हैं। परंतु यहां उन्हें इतना आकर्षक रूप दिया है कि लोगों का अभिवादन करते नजर आते हैं। विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी ने बताया कि थिएटर से जुड़े विद्यार्थी कुछ रचनात्मक करते ही ... बार के बीच के ... चीजों को ... किया ...

काकभगोड़ा को आकर्षक रूप दिया गया है

... खंड अंचल में खेतों की ... वाली के लिए ... खड़े किए ...

पुराने कपड़ों, लकड़ियों और घासफूस का उपयोग करते हुए इन्हें तैयार किया है। यह अन्य राज्यों से आए विद्यार्थियों, विशेषकर शहरी क्षेत्र से जुड़े विद्यार्थियों के बीच आकर्षण का केंद्र बने हैं।

भूविज्ञान विभाग के शोध छात्र अमन सोनी को एम.पी. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

सागर,आचरण। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के भूविज्ञान विभाग के वरिष्ठ शोध छात्र अमन सोनी को एम.पी. युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2025 पृथ्वी एवं वायुमंडलीय विज्ञान में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. यह सम्मान उन्हें विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) में 27 से 29 मार्च 2025 तक आयोजित 40वीं युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति तथा म.प्र.विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी),भोपाल के महानिदेशक के द्वारा सम्मानित किया गया. उन्हें यह पुरस्कार उनके शोध विषय बाबीना क्षेत्र, जिला झांसी, उत्तर प्रदेश के ग्रेनाइट/गनीस की भू-रासायनिक (जीओकेमिस्ट्री) और उत्पत्ति (पेट्रोजेनेसिस) ... प्रदान किया गया. यह पुरस्कार अमन के भूविज्ञान ... उपलब्धि पर ... कुलपति प्रो.नी... समर्थन और ... श्रीमती ममता ... अमन के लिए ... लिए भी एक ... भूविज्ञान के ...

डॉ. साक्षी को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से नवाजा गया

फार्मेसी विभाग को कैंसर के उपचार में शोध के लिये मिला भारतीय पेटेंट

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के फार्मेसी विभाग की शोधार्थी रहीं एवं वर्तमान में राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान अहमदाबाद में रिसर्च एसोसिएट के रूप में कार्यरत डॉ. साक्षी सोनी को कैंसर उपचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। उनके शोध लिपोसोम कम्पोजिशन एंड मैथड फॉर टार्गेटेड ड्रग डिलीवरी को हाल ही में भारतीय पेटेंट प्रदान ... तकनीक विशेष रूप से स्तन ... के लिये तैयार की गई है, ... सीधे कैंसर कोशिकाओं तक ... है और शरीर की सामान्य ... प्रभावित नहीं होतीं। इससे ... सामान्य दुष्प्रभाव जैसे बाल ... और कमजोरी आदि में ... साक्षी ने बताया ... सिन ...

को पॉलीथिलीन ... लिपोसोम पिगायलेटे... कैंसर कोशिकाओं ... इसमें सेल पेनेट्रेटिंग ... है, जिससे यह त... कोशिकाओं को पहच... करती है। इन विट्रो ... वाइवो जानवरों पर परी... अत्यंत प्रभावी और सुर... यह शोध न केवल वैज्ञा... सामाजिक रूप से भी अ... जा रहा है। इस तकनीक ... उपचार को ज्यादा प्रभावश... किफायती बनाया जा सके... शोध कार्य के लिये डॉ. ... में विक्रम विवि उज्जैन में ... युवा वैज्ञानिक कांग्रेस मे... पुरस्कार और नगद ... गया। डॉ ...

राजभाषा निरीक्षण में विवि को मिली सराहना, हिन्दी के प्रति समर्पण की प्रशंसा

प्रेरणा स्रोत बन रहा विश्वविद्यालय का राजभाषा प्रकोष्ठ

सागर, देशबन्धु। गृह मंत्रालय भारत सरकार के राजभाषा विभाग के अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय मध्य भोपाल के उपनिदेशक नरेन्द्र सिंह मेहरा ने मंगलवार को विश्वविद्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान विवि में हिन्दी के प्रभावी क्रियान्वयन की सराहना करते हुये उन्होंने कहा कि विवि का कार्य अन्य संस्थानों के लिये प्रेरणास्रोत है। निरीक्षण के प्रारंभ में मेहरा ने राजभाषा प्रकोष्ठ के राजभाषा अधिकारी एवं संयुक्त कुलसचिव संतोष सोहगौरा तथा अन्य ...यों से भेंट की। इस अवसर पर सोहगौरा ... के माध्यम से विवि में राज... विस्तृत जान... नीलिमा ... बल्कि ... रहा है। ... ट कर ... की ... प्रयोग ... पक ... कि ...

विवि के प्लेसमेंट सेल के माध्यम से हुआ 5 विद्यार्थियों का चयन

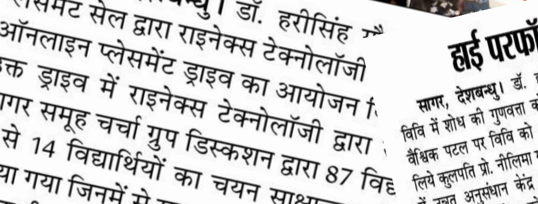

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौ... प्लेसमेंट सेल द्वारा राइनेक्स टेक्नोलॉजी ऑनलाइन प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन कि... उक्त ड्राइव में राइनेक्स टेक्नोलॉजी द्वारा ... सागर समूह चर्चा ग्रुप डिस्कशन द्वारा 87 विद्या... में से 14 विद्यार्थियों का चयन साक्षात्कार के ... किया गया जिनमें से साक्षात्कार उपरांत 5 विद्यार्थि... में साक्षी पाण्डेय कम्प्यूटर साइंस विभाग, मयंक ... स्वामी वाणिज्य विभाग, श्रुति शुक्ला भूगोल विभाग, साक्षी पाटकर भैतिकी विभाग एवं अर्पिता सोनी वाणिज्य विभाग को इनसाइड सेल्स स्ट्रेटजिस्ट के रूप में पांच लाख प्रति वर्ष के सीटीसी पर चयनित किया गया।

हाई परफॉरमेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि में शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने और वैश्विक पटल पर विवि को आगे बढ़ाने के लिये कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन में उन्नत अनुसंधान केंद्र सीएआर में हाई परफॉरमेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन फॉरेंसिक साइंस विभाग में किया गया, जिसमें कुल 40 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की। उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के लिये शुभकामनायें दीं। व्याख्यान सत्र में प्रो. देवाशीष बोस प्रभारी शिक्षक ने प्रतिभागियों को एप्लाइड साइंसेज के विविध क्षेत्र में हाई परफॉरमेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी और उन्नत उपकरणों के उपयोग की महत्ता को बताया। मुख्य वक्ता डॉ. अभिलाषा दुर्गवंशी ने हाई परफॉरमेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी तकनीक की महत्ता और तकनीक के इतिहास, सामान्य परिचय, सिद्धांत की जानकारी दी। डॉ. अभिलाषा दुर्गवंशी ने बताया की इस तकनीक का उपयोग चिकित्सा विज्ञान, दवाओं की खोज, वातावरण प्रदूषण, पेट्रोलियम उद्योग, विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों और हानिकारक रसायनो की उपस्थिति को जानने के लिये किया जाता है। हैंड्स ऑन सत्र डॉ. विवेक कुमार पांडे, सीएआर द्वारा हाई परफॉरमेंस थिन लेयर क्रोमैटोग्राफी उपकरण के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ। सीएआर तकनीकी टीम ने विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया। प्रतिभागियों ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया।

डा. हरीसिंह गौर विवि की शोधार्थी साक्षी ने कैंसर की कीमोथेरेपी में उपयोग होने वाली दवा बनाई

कैंसर के उपचार के शोध में विवि के फार्मेसी विभाग को भारतीय पेटेंट मि...

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर: डा. हरीसिंह गौर विवि के फार्मेसी विभाग की शोधार्थी डा. साक्षी ने कैंसर के उपचार में सहायक दवा को इजाज किया है। जिसका भारतीय पेटेंट भी मिल गया है। इनके शोध कार्य लिपोसोम कम्पोजिशन एंड मैथ्ड फार टारगेटिक ड्रग डिलेवरी का हाल ही में भारतीय पेंटेंट प्राप्त हुआ है।

फार्मेसी विभाग की शोधार्थी एवं वर्तमान में राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा अनुसंधान संस्थान अहमदाबाद में रिसार्ज एसोसियट डा. साक्षी ने उन्होंने बताया कि पारंपरिक कीमोथेरेपी में शरीर की सामान्य कोशिकाएं भी प्रभावित होती हैं। जिससे कई ...

साक्षी सोनी। • स्वयं

पर प्रभाव डालती है, जिससे उपचार अधिक प्रभावी और सुरक्षित बनता है। पारंपरिक कीमोथेरेपी के मुकाबले काफी सुरक्षित और किफायती भी है।

इस दवा से सामान्य स्वस्थ ...

जाते हैं। यह कैंसर कोशिकाओं की मृत्यु कर उनके डीएनए को क्षति पहुंचाता है। इस तकनीक से क्लिनिकल परीक्षण और उद्योग ... स्थानांतरण के लिए भी का... जा रहा है। जिससे प्रयोगशाला से ... जनमानस ... बना ...

सागर

दैनिक भास्कर

विवि • डॉ. साक्षी के शोध पर भारतीय पेटेंट मिला, प्रयोगशाला और जानवरों पर प्रयोग में पाया सुरक्षित और कारगर

स्तन कैंसर के इलाज की नई तकनीक, सीधे ट्यूमर कोशिकाओं ... पहुंची दवा, बाल झड़ने, कमजोरी के साइड इफेक्ट भी रहे कम

स्वस्थ कोशिकाओं को नुकसान से बचाना है। उन्होंने बताया कि ... कीमोथेरेपी में शरीर की ... कोशिकाएं भी प्रभावित होती ... उत्पन्न होते ... वितरण ...

ग्लाइकोल से लेपित लिपोसोम के माध्यम से शरीर में ब्रेस्ट कैंसर की कोशिकाओं तक सीधे पहुंचाया गया। इस लिपोसोम को 4 नामक सेल पेनेट्रेटिंग पेप्टाइड से जोड़ा गया। जिसमें यह खासतौर पर कैंसर कोशिकाओं को पहचान कर उन तक दवा पहुंचाता है। इस तकनीक से ... स्वस्थ कोशिकाएं प्रभावित ... कीमोथेरेपी की ... झड़ना, ...

कैंसर कोशिकाओं के डीएनए को क्षति पहुंचाती है तकनीक

शोध में जो नई तकनीक और दवा तैयार की गई है वह कैंसर कोशिकाओं की मृत्यु कर उनके डीएनए को क्षति पहुंचाता है। ट्यूमर साइट पर लंबे समय तक बना रहता है। जिससे ड्रग की बार-बार जरूरत नहीं पड़ती। इस तकनीक से क्लिनिकल परीक्षण और उद्योग में स्थानांतरण के लिए भी कार्य किया जा रहा है। जिससे यह नवाचार प्रयोगशाला से निकलकर आम जनमानस के जीवन को बेहतर बना सके। इस शोध कार्य के लिए डॉ. साक्षी को हाल ही विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा आयोजित 40वीं युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार और नकद राशि से भी सम्मानित किया गया। डॉ. साक्षी सोनी ने बताया मार्गदर्शक प्रो. वंदना सोनी और प्रो. सुशील कुमार काशव के साथ कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन से यह शोध सफल हो सका।

सागर, शुक्रवार, 11 अप्रैल, 2025 | 2

इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ेगा: भारत सरकार ने एकमुश्त 434 करोड़ रुपए किए स्वीकृत, वैली कैंपस में होगा सभी का निर्माण

विवि में 2000 सीट क्षमता के दो छात्रावास, आईटी लैब व कन्वेंशन सेंटर बनेंगे

भास्कर संवाददाता | सागर

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालय में नए अकादमिक भवनों और छात्रावासों के निर्माण के लिए 434.77 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं। इनसे अकादमिक भवनों के साथ ही स्वास्थ्य केंद्र, आईटी लैब, कन्वेंशन सेंटर और एक-एक हजार की क्षमता वाले बालक-बालिका छात्रावासों का निर्माण कराया जाएगा। यह सभी निर्माण वैली कैंपस में होंगे। शिक्षा मंत्रालय की नई दिल्ली में हुई बैठक में ये सभी प्रस्ताव स्वीकृत किए गए हैं। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बैठक में विश्वविद्यालय में उपलब्ध मौजूदा संसाधनों, छात्रों की संख्या, छात्रावासों की संख्या, छात्रावासों की सुविधाओं का उल्लेख करते हुए विस्तृत पावर-पॉइंट प्रजेंटेशन दिया। विद्यार्थियों के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकताओं को बताया। उन्होंने वर्ष 2023 में विश्वविद्यालय को नैक से मिली ए-प्लस ग्रेड, विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या, विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रमों, शिक्षक और कर्मचारियों की संख्या, एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के क्रियान्वयन में अग्रणी रहने और भारतीय सेना के महार रेजीमेंट के साथ हुए अकादमिक समझौता और अग्निवीरों को शैक्षणिक उन्नयन की दिशा में कार्य करते हुए उन्हें डिग्री देने जैसी उपलब्धियों की भी जानकारी दी।

इनके लिए मिली राशि

194 करोड़: एक-एक हजार सीट की क्षमता वाले एक बालक-एक बालिका छात्रावास के लिए।

99.71 करोड़: इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी भवन के निर्माण के लिए।

67.60 करोड़: होटल एंड कैटरिंग मैनेजमेंट, इंस्टिट्यूट ऑफ ... एंड टूरिज्म मैनेजमेंट, वा... और प्रबंधन विभाग के ए...

15.42 करोड़: विश्ववि... स्वास्थ्य केंद्र के लिए।

33.58 करोड़: कंप्यूटर आ... परीक्षा केंद्र, प्रयोगशाला, आईटी... एवं ऑनलाइन सेंटर के लिए।

23.96 करोड़: बहु-उद्देश्यीय सम्मेलन केंद्र के लिए।

विद्यार्थियों की संख्या, जरूरतों के चलते एक बार में ही मंजूरी

विश्वविद्यालय के विशाल परिसर, उपलब्धियों और विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों की लगातार बढ़ती संख्या, विविधता, विद्यार्थियों के लिए बढ़ती छात्रावासों की आ... आधुनिक सुविधाओं के साथ अकादमिक भवनों की आ... केंद्र, आईटी केंद्र, कम्प्यूटर सेंटर, ब... विचार करते हुए ...

हम आधुनिक विवि में भी सर्वश्रे...

नईदुनिया

आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ विवि प्रगति की दिशा में नई उड़ान भरने जा रहा है: कुलपति

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर ... की दिशा में नई उड़ान भरने जा रहा है. ... भारत सरकार द्वारा ... अकादमिक भवनों और ... करोड़ रुपए ... ऑफ़ ... निर्माण ... कैटरिंग ... लटी एंड ... और प्रबंधन ... लिए 67.60 ... क्षमता वाले दो ... एवं एक कन्या ... 4.50 करोड़, ... के लिए 15.42 ... परीक्षा केंद्र, ... एवं ऑनलाइन सेंटर ... गए हैं. इन सभी नए भवनों का निर्माण वैली कैम्पस में किया जाएगा। शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली में संपन्न हुई बैठक में ये सभी प्रस्ताव स्वीकृत किये गए हैं. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बैठक में विश्वविद्यालय में उपलब्ध मौजूदा संसाधनों, छात्रों की संख्या छात्रावासों की संख्या, छात्रावासों की सुविधाओं का उल्लेख करते हुए विस्तृत पावर-पॉइंट प्रजेंटेशन दिया और विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त इंफ्रास्ट्रक्चर और ...

नैक द्वारा प्रदत्त ए प्लस ग्रेड, विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या, विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रमों, शिक्षक और कर्मचारियों की संख्या, एकेडमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट के क्रियान्वयन में अग्रणी रहने और भारतीय सेना के महार रेजीमेंट के साथ हुए अकादमिक समझौता और अग्निवीरों को शैक्षणिक उन्नयन की दिशा में कार्य करते हुए उन्हें डिग्री प्रदान करने जैसी उपलब्धियों को रेखांकित किया। विश्वविद्यालय के विशाल परिसर, विश्वविद्यालय की उपरोक्त उपलब्धियों और विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों की लगातार बढ़ती संख्या, विविधता, विद्यार्थियों हेतु बढ़ती छात्रावासों की आवश्यकता, आधुनिक सुविधाओं के साथ अकादमिक भवनों की आवश्यकता, आधुनिक स्वास्थ्य केंद्र, आईटी केंद्र, कम्प्यूटर सेंटर, बहु-उद्देशीय सम्मेलन केंद्र ... करते हुए ... किये गये हैं.

विश्वविद्यालय: इतिहास विभाग में महात्मा ज्योतिबा फुले की 198 वीं जयंती मनाई गई

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के इतिहास विभाग में डॉ. अम्बेडकर चेयर और इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा ज्योतिबा फुले की 198 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया आज कैसे याद करें विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अम्बेडकर चेयर के सहायक प्राध्यापक डॉ. देवेंद्र विश्वकर्मा ने विषय प्रवर्तन और स्वागत भाषण दिया। उन्होंने बताया कि हमें महात्मा फुले के जीवन से यह सीख मिलती है, कि सामाजिक परिवर्तन का प्रारंभ हमें स्वयं के घर और परिवार से करना चाहिए और हमें उनके विचारों को आगे बढाने का कार्य करना चाहिए. डॉ. अंबेडकर चेयर के प्रभारी अध्यक्ष प्रो. राजेश गौतम ने ... संघर्षपूर्ण ... कराया ... से शिक्षा के ... तथा हमें ... तार्किक ब... कार्य... इतिहास ...

अशोक अहिरवार ने कहा कि हमें आज गर्व की अनुभूति होती है कि वर्तमान युवा ...

में अग्रसर है, यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है. डॉ. संजय बरोलिया ने कहा कि ...

सशक्तिकरण को समर्पित रहा. डॉ. सिंह ने बताया कि ज्योतिबा ने असमानता, अन्याय, अत्याचार एवं अशिक्षा से लड़ना सिखाया. ज्योतिबा हर पिछड़े, शोषित, दमित एवं पीड़ित के लिए प्रेरणाश्रोत थे उनके विचार आज भी प्रासंगिक है. अर्थशास्त्र विभाग से डॉ. वीरेन्द्र मटसेनिया व संस्कृत विभाग के डॉ. रामहेत गौतम ने भी उपस्थित रहकर ज्योतिबा फुले पर अपने विचा... किए। इतिहास विभाग के श... मोनाली यादव, विशेष जोठे, अ... श्रीवास्तव, एवं परास्नातक के विद्या... संत कुमार सोनी और द्रोपदी रजक ने ... महात्मा फुले पर अपने विचार अत्यंत ... सारगर्भित एवं सृजनात्मक तरीकों से प्रेषित किए। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. पंकज सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। ...

बिना ज्ञान और बगैर शिक्षा के विकास संभव नहीं है: डा. तोमर

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर: डाक्टर ... गौर विश्वविद्यालय में डा. ... चेयर द्वारा डा. गौर एवं डा. ... का सामाजिक चिंतन विषय ... वार को विचार गोष्ठी का ... किया गया। ... में विवि हिंदी विभाग के ... प्राध्यापक डा. अवधेश कुमार ...

... कार्यक्रमों ... चलती है। ... शोध छात्र ... दीनदयाल ... ठाकुर, ... सिलेक्ट ... कुमार आदि

देश में अनेक भवन, संस्थान और 15 विवि डॉ. अंबेडकर के नाम पर हैं, जो उनकी असाधारण प्रतिभा के प्रतीक हैं: कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर में भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134वीं जयंती के अवसर पर डॉ. अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र एवं डॉ. अम्बेडकर चेयर के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में डॉ. अम्बेडकर: लोकतांत्रिक चेतना और सामाजिक न्याय के सर्वकालिक स्वर विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात सामाजिक चिंतक डॉ. सदानंद दामोदर सप्रे रहे, जबकि इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की।

मुख्य अतिथि डॉ. सप्रे ने डॉ. अम्बेडकर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी ऑक्सफोर्ड जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा अध्ययन के प्रति समर्पण के बल पर असाधारण उपलब्धियां अर्जित कीं। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा किए गए एक शोध में उन्हें मानवता के 'मेकर्स ऑफ यूनिवर्स' की सूची में स्थान दिया गया। विशिष्ट अतिथि प्रो. अशोक अहिरवार ने कहा डॉ. अम्बेडकर ने आजीवन वंचित वर्गों सहित समाज के प्रत्येक वर्ग के अधिकारों की पैरवी की। उनका जीवन संघर्ष और उपलब्धियों का अद्भुत संगम है, जो आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है। अध्यक्षता कर रहीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक योगदान ने भारत में सामाजिक न्याय एवं समावेशी समाज की नींव ... उल्लेख किया कि आ... अनेक भवन, संस्थान ... 15 विश्वविद्यालय डॉ. ... के नाम पर संचालित हैं, ... असाधारण प्रतिभा, योग्य... जीवटता का प्रतीक है।

कार्यक्रम में प्रो. चंदा ... समन्वयक डॉ. अम्बे... उत्कृष्टता केंद्र ने स्वागत भ... प्रस्तुत किया तथा उर्दू विभागा... प्रो. राजेन्द्र यादव ने मुख्य अति... का परिचय कराया। कार्यक्रम क... संचालन डॉ. वीरेंद्र मटसेनिया द्वारा एवं आभार प्रदर्शन प्रो. राजेश गौतम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. सुशील कासव, प्रो. केएस पित्रे, आरएसएस के क्षेत्र संपर्क प्रमुख सुनील देव, डॉ. सतीश कुमार, डॉ. देवेंद्र विश्वकर्मा, अनिल अवस्थी आदि मौजूद थे।

सागर। कुलपति सहित अन्य अतिथियों ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र बांटे।

पत्रिका
सागर, मंगलवार, 15 अप्रैल, 2025

डा. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में संगोष्ठी का हुआ आयोजन

समाज उद्धारक, दूरदृष्टा व निडर विचारक थे डॉ. आंबेडकर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में डॉ. भीमराव आंबेडकर की 134 वीं जयंती के अवसर पर लोकतांत्रिक चेतना व सामाजिक न्याय के सर्वकालिक स्वर विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि सामाजिक चिंतक डॉ. सदानंद दामोदर सप्रे कहा कि डॉ. आंबेडकर ने विषम परिस्थितियों में भी ऑक्सफोर्ड जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की और अध्ययन के प्रति समर्पण के बल पर असाधारण उपलब्धियां अर्जित कीं।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा किए गए एक शोध में उन्हें मानवता के 'मेकर्स ऑफ यूनिवर्स' की सूची में स्थान दिया गया। डॉ. आंबेडकर सिर्फ संविधान निर्माता ही नहीं थे, बल्कि समाज के उद्धारक, प्रखर दूरदृष्टा और निडर विचारक थे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. आंबेडकर जयंती उनके विचारों, सद्भावना, समरसता और दूरदृष्टि को आत्मसात करने का अवसर है। देशभर में अनेक भवन, संस्थान और करीब 15 विश्वविद्यालय डॉ. आंबेडकर के नाम पर संचालित हैं, यह उनकी असाधारण प्रतिभा, योग्यता और जीवटता का प्रतीक है। कार्यक्रम में प्रो. चंदा बेन, प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. राजेन्द्र यादव, डॉ. वीरेंद्र मटसेनिया, सुनील देव, डॉ. सतीश कुमार, डॉ. देवेंद्र विश्वकर्मा, अनिल अवस्थी, संदीप जैन, नीरज उपाध्याय, करण बहादुर आदि उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय: इतिहास विभाग में अम्बेडकर जयंती के उपलक्ष्य में विचार गोष्ठी हुई

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: विकसित भारत की ओर अग्रसर मार्ग

प्रो. नीलिमा गुप्ता

संत रामभद्राचार्य को मानद उपाधि देगा डॉ. गौर विश्वविद्यालय

सागर| डॉक्टर हरीसिंह गौर मंगल... विश्वविद्यालय संत रामभद्राचार्य को ... मानद उपाधि देगा। यह निर्ण... दीक्षान्त समारोह के ... लिए की गई ... समा...

केंद्रीय विद्यालय में प्रवेश उत्सव मनाया, लगाया तिलक

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

...र . डॉ. हरिसिंह गौर ...विश्वविद्यालय परिसर स्थित केंद्रीय ...लय क्रमांक-4 कक्षा एक में ...वेशी विद्यार्थियों आयोजित ...वेश कार्यक्रम हर्षोल्लास के ...नाया गया। ... लगाकर स्वागत किया। प्राचार्य राजेंद्र सिंह वर्मा ने उपहार भेंट किए। प्राचार्य ने कहा कि आज से बच्चों के जीवन के एक नए अध्याय की शुरुआत हो रही है जो उनके जीवन में उज्जवल भविष्य की नींव रखेगी। कक्षा एक की कक्षा अध्यापिका ...शिवांगी तोमर ने बच्चों के लिए ...विभिन्न रोचक गतिविधियों का ...आयोजन किया गया। संचालन में ...नीता डोंगरे व मनोज कुमार नेमा ... किया।

भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134वीं जयंती के अवसर पर व्याख्यान

अम्बेडकर जयंती मात्र स्मरण नहीं, विश्वविद्यालय की कार्यसंस्कृति में समरसता का संकल्प है- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉ. अम्बेडकर: असहमति की निडर आवाज और सामाजिक पुनर्निर्माण के शिल्पी- डॉ. सदानंद दामोदर सप्रे

सुबह सवेरे
17 Apr 2025 - Page 5

सशक्त एवं विकसित भारत का आधार स्तंभ

विदेशों में भारतीय शिक्षा ब्रांड का निर्यात करने और शिक्षा के क्षेत्र में भारत 'विश्व गुरु' बनने की तैयारी कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने हमारी सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित कर, नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया है। भारतीय शैक्षणिक आभा का विस्तार महिला नेतृत्व, डिजिटलीकरण और प्रभावी संसाधन जुटाने की रणनीतियों को अपनाने से हुआ है, जिससे देश ज्ञान केंद्र में बदल गया है।

हरिभूमि न्यूज़

औषधीय पौधों के महत्व एवं प्राकृतिक उपचार पद्धतियों पर विशेष व्याख्यान किया आयोजित

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंध विभाग द्वारा एक विशेष अतिथि व्याख्यान का आयोजन विभागाध्यक्ष प्रो. वाई. एस. ठाकुर के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। आयोजन में आनंद जैन, संस्थापक जीवन हर्बल उत्पाद और सोलर प्लांट, ने छात्रों को अपने अनुभवों से अवगत कराया। अपने उद्बोधन में जैन ने बताया कि कैसे उन्होंने पारंपरिक हर्बल ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर जीवन हर्बल उत्पाद की नींव रखी। उन्होंने औषधीय पौधों के महत्व, प्राकृतिक उपचार पद्धतियों और उनके प्रभावी उपयोग पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि स्टीविया प्राकृतिक रूप से मीठा होता है, ऐसे में चीनी से कई गुना अधिक लाभदायक है। उन्होंने इसकी बागवानी के विषय में भी छात्रों को अवगत कराया। इसके साथ ही उन्होंने अपने सोलर प्लांट प्रोजेक्ट पर भी विस्तार से चर्चा की। जिसमें उन्होंने अक्षय ऊर्जा की महत्ता, पर्यावरणीय प्रभाव और युवा उद्यमियों के लिए इसमें मौजूद अवसरों की जानकारी दी। छात्रों ने श्री जैन से उत्साहपूर्वक सवाल पूछे और उद्यमिता, स्टार्टअप शुरू करने की चुनौतियों व संभावनाओं पर गहन चर्चा हुई। व्याख्यान का उद्देश्य छात्रों को नवाचार सतत विकास और स्वावलंबन की दिशा से प्रेरित करना था। जिसे जैन ने पूर्ण रूप से सफल बनाया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उक्त अवसर पर विभाग के शिक्षक, विद्यार्थियों सहित कर्मचारी उपस्थित रहे।

कन्फोकल लेजर स्कैनिंग माइक्रोस्कोप पर हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि में उन्नत अनुसंधान केंद्र सीएआर में कन्फोकल लेजर स्कैनिंग माइक्रोस्कोप सीएलएसएम पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें चुनिंदा 13 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. विवेक कुमार पांडे प्रभारी सीएआर ने सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। उन्नत अनुसंधान केंद्र की मुख्य समन्वयक प्रो. श्वेता यादव ने केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। मुख्य वक्ता डॉ. अर्चिता सिंह ने बताया सीएलएसएम एक शक्तिशाली इमेजिंग तकनीक है, जिसका उपयोग जीवविज्ञान, नैनोटेक्नोलॉजी और मटेरियल साइंस जैसे क्षेत्रों में किया जाता है। पारंपरिक लाइट माइक्रोस्कोप के विपरीत, सीएलएसएम लेजर लाइट और पिनहोल का उपयोग करके केवल एक बिंदु पर ध्यान केंद्रित करता है और प्रत्येक परत से चित्र कैप्चर करता है। इससे शोधकर्ताओं को नमूने के तीन आयामी चित्र प्राप्त करने में मदद मिलती है। जीवित कोशिकाओं और उतकों का अध्ययन करते समय शोधकर्ताओं को कोशिकाओं के अंदर की गतिविधियों जैसे प्रोटीन का स्थान और जीन अभिव्यक्ति को वास्तविक समय में देखने की सुविधा देता है। सामग्री विज्ञान में नैनोमैटेरियल्स, कोटिंग्स और पतली परतों का विश्लेषण करने के लिये किया जाता है। इस तकनीक के माध्यम से शोधकर्ता इन सामग्रियों की सतह परिष्करण, दोष और परतों का विश्लेषण कर सकते हैं। हैंड्स ऑन सत्र शिवप्रकाश सोलंकी, आशीष चढ़ार द्वारा सीएलएसएम के हार्डवेयर भाग और इसके सहायक उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू हुआ। विभिन्न पृष्ठभूमि से सैम्पल तैयार करने पर विशेष जोर दिया। प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके विश्लेषण से लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी प्रदान की। डॉ. अर्चिता सिंह ने प्रतिभागियों की रुचि के क्षेत्र से संबंधित प्रश्नों पर उनका उत्तर दिया। सैम्पल तैयार करने के लिये प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक समूह ने सैम्पल तैयार किया और अपने सैम्पल का विश्लेषण किया।

दैनिक भास्कर — सागर

5 सालों में पुस्तकें पढ़ने वाले 4.2% वयस्क घटे क्योंकि डिजिटल दुनिया का आकर्षण बढ़ा

प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि, सागर

सागर | एक दशक पहले के आंकड़े के अनुसार प्रति वर्ष 54.6% वयस्क पुस्तकें पढ़ा करते थे। पिछले 5 वर्ष के आंकड़ों में यह 52.7% है। वर्तमान में 48.5% वयस्क पुस्तक पढ़ते हैं। जहां एक ओर साक्षरता दर बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर पुस्तक पढ़ने की निरंतर घटती हुई संख्या चिंताजनक है। ...

सुविधा — वरिष्ठ नागरिकों के लिए विभिन्न गतिविधियां होंगी, स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया जाएगा

अब विश्वविद्यालय में स्थापित होगा वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय का फाइल फोटो। • नवदुनिया

होंगे कई कार्यक्रम

भारतीय शिक्षण मंडल का 56 वां स्थापना दिवस समारोह मनाया

विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान व चरित्र निर्माण पर केंद्रित कार्य कर रहा है

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय इकाई ने रंगनाथन सभागार में भारतीय शिक्षण मंडल का 56 वां स्थापना दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर शिक्षा से ज्ञान, ज्ञान से चरित्र और चरित्र से राष्ट्र का निर्माण विषय पर व्याख्यान हुआ। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतीय शिक्षण मंडल विगत 56 वर्षो से शिक्षा के मूल्यों को संवारने और भारतीयता को गढ़ने का काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शामिल अवसर इसके सजीव उदाहरण हैं, हमारा विश्व विद्यालय भारतीय ज्ञान और चरित्र निर्माण पर केंद्रित कार्य कर रहा हैं।

मुख्य वक्ता अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. संजय पाठक कहा कि शिक्षा से हमें केवल ज्ञान नहीं संस्कार व श्रेष्ठ जीवन मूल्य ...

... करना है, इससे हम विद्वान नहीं विद्यावान बनेंगे। जो विद्यावान होता है उसके व्यक्तिगत, सामाजिक, आध्यात्मिक और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण हो जाता है। ...

... अपना तंत्र न विकसित हो। इस अवसर पर संगीत विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अवधेश प्रताप तोमर ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। डॉ. अभिज्ञान द्विवेदी ने ध्येय श्लोक व डॉ. शारदा विश्वकर्मा ने ध्येय वाक्य का वाचन किया। इकाई संयोजक प्रोफेसर सुशील कुमार काशव ने 56 वें स्थापना ... कार्यक्रम में ... का परिचय ... वास्तव ने ... डॉ. देवकी ...

तोहफा — अकादमिक भवन, आधुनिक अस्पताल, आईटी सेंटर और कम्प्यूटर लैब बनाया जाएगा

सागर सेंट्रल यूनिवर्सिटी को मिली 434 करोड़ की सौगात

पत्रिका न्यूज नेटवर्क. सागर

डॉ. हरिसिंह गौर यूनिवर्सिटी को भारत सरकार ने बड़ी सौगात दी है और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के लिए 434 करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि की मंजूरी दी है। इस राशि से यूनिवर्सिटी में अकादमिक भवन, अस्पताल, आईटी लैब, ...

कुलपति के प्रयासों की सराहना

यूनिवर्सिटी के विशाल परिसर में बनेंगी इमारतें

गौरतलब है कि सागर यूनिवर्सिटी का क्षेत्रफल करीब 1400 एकड़ है। ...

इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के नवीन भवन का होगा निर्माण

व्यक्तित्व विकास के लिए जरूरी हैं पुस्तकें

पुस्तक दिवस

• प्रो. नीलिमा गुप्ता

एक दशक पहले के आंकड़े के अनुसार प्रति वर्ष 54.6 प्रतिशत वयस्क पुस्तकें पढ़ते थे, ...

विश्वविद्यालय • भारतीय मन, मानस और संस्कृति का पुनर्बोध विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ

भारतीय संस्कृति वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण में अग्रणी रही है: मंत्री लोधी

भास्कर संवाददाता | सागर

विश्वविद्यालय में हुए कार्यक्रम को संबोधित करते मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में धर्मपाल स्मृति दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यमंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा ... विशिष्ट अतिथि मुख्य ...

... आधुनिकता, उपभोक्तावाद और औद्योगीकरण के प्रभाव में भारतीय समाज अपनी मूल सांस्कृतिक जड़ों से दूर हो गया है। उन्होंने युवाओं में भारतीय मूल्यों, जैसे योग, आयुर्वेद, पारिवारिक संस्कार और राष्ट्र सेवा की भावना जागृत करने की आवश्यकता जताई। कुलपति ने कहा हमें भारतीय ज्ञान परंपरा, गीता, रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथों को शिक्षा प्रणाली में शामिल कर छात्रों को जीवन मूल्यों से जोड़ना होगा।

मंत्री लोधी ने भारतीय संस्कृति के गौरवशाली अतीत पर प्रकाश डाला और धर्मपाल के योगदान को अविस्मरणीय बताया। उन्होंने शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी प्रभाव की आलोचना करते हुए युवाओं को भारतीय ज्ञान, भाषा और विरासत से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पश्चिमी शिक्षा प्रणाली ने भारतीय मूल्यों को पीछे छोड़ दिया है, जबकि भारतीय संस्कृति वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण में अग्रणी रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने पृथ्वी की गोलाई, गुरुत्वाकर्षण और जीवन विज्ञान जैसे विषयों पर हजारों वर्ष पहले ही गहन अध्ययन किया था। उन्होंने संस्कृत भाषा को सभी भाषाओं की जननी बताते हुए युवाओं से भारतीयता पर गर्व करने की बात कही। कार्यक्रम में छह तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया है, जिसमें विद्वान वक्ता धर्मपाल के विचारों, इतिहास विश्लेषण और सामाजिक दृष्टिकोण पर विस्तार से चर्चा करेंगे। अतिथियों ने मध्य भारती शोध पत्रिका के नवीन अंकों का विमोचन किया। संचालन डॉ. किरण आर्य ने किया। आभार संतोष वर्मा ने माना। इस मौके पर प्रो. चंदा बेन, प्रो. राजेन्द्र यादव, डॉ. नवीन सिंह, डॉ. विवेक जायसवाल आदि मौजूद थे।

दैनिक **दबंग बुन्देलखण्ड** — सच का साहस....... | **सागर** | टीकमगढ़, गुरूवार 24 अप्रैल 2025 | **2**

युवाओं को भारत के गौरवशाली अतीत को बताये जाने की आवश्यकता है- धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी

शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि चरित्र और आत्मबल का निर्माण भी हो- कुलपति

दबंग बुन्देलखण्ड

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के अभिमंच सभागार में श्री धर्मपाल स्मृति द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ मां सरस्वती के सम्मुख अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन और वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश शासन के राज्यमंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि मुख्य चुनाव आयुक्त मनोज श्रीवास्तव, सागर स्कूल शिक्षा संयुक्त संचालक डॉ. मनीष वर्मा, धर्मपाल शोधपीठ के निदेशक संतोष वर्मा एवं शैक्षिक अध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार जैन विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन थे। डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए भारतीय इतिहासकार और गांधीवादी विचारक धर्मपाल जी के जीवन और चिंतन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि धर्मपाल जी आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से असंतुष्ट थे और मानते थे कि यह भारतीय आत्मा से अलग करती है। उनका मानना था कि भारत का वास्तविक उत्थान तभी संभव है जब हम यूरोपीय बौद्धिक प्रभावों से मुक्त होकर अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ें. डॉ. तिवारी ने प्रतिभागियों से इन सत्रों में सक्रिय भागीदारी का आग्रह किया और कहा कि इस विमर्श से हम भारत की आत्मा के करीब पहुंच सकते हैं। कुलपति ने अध्यक्षीय उद्बोधन में भारतीय संस्कृति, मूल्य आधारित शिक्षा और युवाओं के व्यक्तित्व विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने संस्कृति विभाग भोपाल का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम भारतीय मानस के पुनरुद्धार की दिशा में एक सार्थक पहल है। उन्होंने कहा कि आधुनिकता, उपभोक्तावाद और औद्योगीकरण के प्रभाव में भारतीय समाज अपनी मूल सांस्कृतिक जड़ों से दूर हो गया है. उन्होंने युवाओं में भारतीय मूल्यों, जैसे योग, आयुर्वेद, पारिवारिक संस्कार

और राष्ट्र सेवा की भावना जागृत करने की आवश्यकता जताई. उन्होंने शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्ति तक सीमित न रखते हुए, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से मूल्य आधारित, कौशल उन्मुख और चरित्र निर्माण केंद्रित शिक्षा को लागू करने की बात की। विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे स्किल एन्हांसमेंट कोर्स, वैल्यू बेस्ड एजुकेशन और कम्युनिटी कॉलेज पहल का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि कैसे विश्वविद्यालय समाज निर्माण में योगदान दे रहा है। कुलपति ने कहा कि हमें भारतीय ज्ञान परंपरा, गीता, रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथों को शिक्षा प्रणाली में शामिल कर छात्रों को जीवन मूल्यों से जोड़ना होगा। उन्होंने स्वामी विवेकानंद और डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचारों की बात करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि चरित्र और आत्मबल का निर्माण करना होना चाहिए. श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने भारतीय संस्कृति के गौरवशाली अतीत पर प्रकाश डाला और धर्मपाल जी के योगदान को अविस्मरणीय बताया. उन्होंने शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी प्रभाव की आलोचना करते हुए युवाओं को भारतीय ज्ञान, भाषा और विरासत से जुड़ने का आह्वान किया. उन्होंने कहा कि पश्चिमी शिक्षा प्रणाली ने भारतीय मूल्यों को पीछे छोड़ दिया है, जबकि भारतीय संस्कृति वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण में अग्रणी रही है. उन्होंने अनेक ऐतिहासिक और पौराणिक उदाहरणों के माध्यम से बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा ने पृथ्वी की गोलाई, गुरुत्वाकर्षण और जीवन विज्ञान जैसे विषयों पर हजारों वर्ष पहले ही गहन अध्ययन किया था. उन्होंने संस्कृत भाषा को सभी भाषाओं की जननी बताते हुए युवाओं से भारतीयता पर गर्व करने की बात कही. उन्होंने एक कविता के माध्यम से देश की सांस्कृतिक विरासत पर गर्व व्यक्त किया और युवाओं को जागरूक होने का संदेश दिया। उन्होंने आयोजकों और उपस्थित जनसमुदाय का आभार व्यक्त करते हुए भारत माता की जय के उद्घोष के साथ अपना उद्बोधन समाप्त किया। कार्यक्रम में छह तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया है, जिसमें विद्वान वक्ता धर्मपाल जी के विचारों, इतिहास विश्लेषण और सामाजिक दृष्टिकोण पर विस्तार से चर्चा करेंगे. कार्यक्रम में स्कूल शिक्षा विभाग के प्रतिभागी, विवि के शिक्षक, ...

... मानविकी एवं सामाजिक ... शोध पत्रिका मध्य भारती ... अंकों 86 एवं 87 का विमो... इस अवसर पर सम्पादक मंडल सदस्य उपस्थित थे।

सागर सिटी

अतुल्य भास्कर — सागर, 24 अप्रैल 2025

युवाओं को भारत के गौरवशाली अतीत को बताये जाने की आवश्यकता है: राज्यमंत्री धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी

- शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि चरित्र और आत्मबल का निर्माण भी हो- कुलपति
- भारतीय मन, मानस और संस्कृति का पुनर्बोध विषय पर धर्मपाल स्मृति द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

अतुल्य भास्कर, सागर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के अभिमंच सभागार में धर्मपाल स्मृति द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ ...

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाया गया

पुस्तक का हर पन्ना हमें नए विचारों और नई संस्कृति से करवाता है परिचय : कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सागर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के जवाहरलाल नेहरु केन्द्रीय पुस्तकालय के रंगनाथन भवन में पुस्तक और पठन के आनंद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ल्ड बुक और कॉपीराइट डे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने रंगनाथ भवन, जवाहर लाल नेहरु केन्द्रीय पुस्तकालय में 'बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण और प्रौद्योगिकी वाणिज्यीकरण' विषय पर कार्य शाला का शुभारंभ किया गया।

मुख्य वक्ता डॉ. संजीव कुमार मजूमदार, ...

... हुए, बौद्धिक संपदा अधिकारों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने ... नेशन वन सब्सक्रिप्शन' विषय पर एक क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए ...

केन्द्रीय पुस्तकालय ... उद्घाटन भी किया ... पुस्तकें और ...

विश्वविद्यालय में विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाया गया

पुस्तक का हर पन्ना हमें नए विचारों और नई संस्कृति से परिचय कराता है: कुलपति

विश्वविद्यालय- स्टार्टअप, नवाचार एवं उद्यमिता विषय पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन

परिहार गर्जना न्यूज। सागर. डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल एवं कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के संयुक्त तत्वावधान में स्टार्टअप, नवाचार एवं उद्यमिता विषय पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 23 अप्रैल 2025 को किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. संजीव कुमार मजूमदार को आमंत्रित किया गया. डॉ. मजूमदार वर्तमान में राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम, नई दिल्ली में वरिष्ठ प्रबंधक और प्रौद्योगिकी प्रमुख (नई सुविधाएं) के पद पर कार्यरत हैं, जो भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग के अंतर्गत एक उद्यम है. डॉ. मजूमदार ने विश्वविद्यालय में हो रहे विभिन्न शोध कार्यों का पेटेंट कराने संबंधी प्रक्रिया एवं उसमें उनकी संस्था राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम की भूमिका की जानकारी दी साथ ही ...

... भी प्रदान की.

इस संवाद कार्यक्रम में ... लेने हेतु विद्यार्थी काफी उत्साहित रहे उन्होंने इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया. कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के विभागाध्यक्ष तथा प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल कोऑर्डिनेटर डॉ. अभिषेक बंसल द्वारा डॉ. मजूमदार के प्रति आभार व्यक्त किया तथा बताया कि प्लेसमेंट एवं स्टार्टअप सेल की संरक्षक कुलपति ... के निर्देशन सार ...

भारतीय संस्कृति और मानस पर राष्ट्रीय मंथन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में द्विदिवसीय संगोष्ठी संपन्न

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि में भारतीय मन, मानस और संस्कृति का पुनर्बोध विषय पर केंद्रित द्विदिवसीय धर्मपाल स्मृति राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह आयोजन धर्मपाल शोधपीठ, स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग भोपाल द्वारा प्रायोजित था। संगोष्ठी के विभिन्न तकनीकी सत्रों में देशभर से आमंत्रित ... ने विचारोत्तेजक वक्तव्य प्रस्तुत किये। ... में प्रो. नंदकिशोर आचार्य, प्रो. सत्यकेतु ... कुमार प्रशांत, रघु ठाकुर, ... डॉ. मिथलेश शरण चौबे एवं अन्य ... समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर ने ... गांधीजी के स्वराज चिंतन को ... बहादुर सिंह ने भारतीय ... कुमार प्रशांत ...

एवं प्रो. सत्यकेतु सांकृत ने सारगर्भित उद्बोधन दिये। संचालन डॉ. किरण आर्य द्वारा किया गया, जबकि स्वागत, प्रतिवेदन और आभार क्रमशः डॉ. अनिल कुमार तिवारी, डॉ. अर्चना वर्मा और डॉ. योगेश कुमार पाल द्वारा किया गया। संगोष्ठी के आयोजन में दर्शन विभाग एवं जीवनपर्यन्त शिक्षा विभाग की महती भूमिका रही। संयोजन डॉ. अनिल कुमार तिवारी एवं अदिति गौर ने किया, जबकि समन्वयक डॉ. संजय शर्मा तथा आयोजन सचिव डॉ. योगेश पाल व डॉ. अर्चना वर्मा थे। संगोष्ठी में विवि के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी, सागर ... के विद्यालयों और महाविद्यालयों से आये लगभग 400 ... सक्रिय सहभागिता की।

न्यूक्लियर मैग्नेटिक रेजोनेंस स्पेक्ट्रोमीटर एनएमआर पर एक दिवसीय हैंड्सऑन प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के उन्नत अनुसंधान केंद्र सीएआर में न्यूक्लियर मैग्नेटिक रेजोनेंस स्पेक्ट्रोमीटर एनएमआर पर एक दिवसीय हैंड्स ऑन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें 35 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. विवेक कुमार पांडे प्रभारी, सीएआर ने उन्नत अनुसंधान केंद्र के संक्षिप्त परिचय के साथ सत्र की शुरुआत की और ऐसे कार्यक्रमों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। मुख्यवक्ता डॉ. केके डे प्रभारी शिक्षक ने बताया कि एनएमआर विश्लेषण एक अलेखनीय तकनीक है जिसका उपयोग किसी सैम्पल की शुद्धता, कंटेंट और साथ ही साथ मोलिक्यूलर संरचना के बारे में पता लगाने में, खाद्य गुणवत्ता ...

सोलंकी, सौरभ साह, प्रिंस सेन और ... द्वारा एनएमआर के हार्डवेयर भाग और ... उपकरणों के संक्षिप्त परिचय के साथ प्रतिभागियों को सैम्पल तैयार करने, उसके ... लेकर डेटा व्याख्या तक की पूरी जानकारी ... गई। डॉ. केके डे ने प्रतिभागियों की रुचि के संबंधित प्रश्नों पर विचार किया एवं उनका ... प्रतिभागियों द्वारा एनएमआर पर संपूर्ण व्यावहारिक ... और सुरक्षा प्रोटोकॉल आदि के महत्व के बारे में ... ही बुनियादी से लेकर उन्नत स्तर तक जानकारी सी ... तकनीकी टीम के डॉ. विवेक कुमार पांडे, शिवप्र... सोलंकी, सौरभ साह, आशीष चढ़ार, अरविंद ...

महात्मा गांधी ने स्वराज पुस्तक में अपने अनुभवों को संवाद के रूप में प्रस्तुत किया : रघु ठाकुर

सागर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में धर्मपाल स्मृति राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। दूसरे दिन मुख्य अतिथि समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने कहा कि जब हम महात्मा गांधी को याद करते हैं और किसी ... विशेषकर स्वराज पर ... प्रसिद्ध ... है। यह ... सबसे ... प्रभावशाली ... गांधी ने ... के रूप में ...

स्वाद और संस्कृति में विविधता है। यही विविधता हमारे समाज की खूबसूरती है। हमारे देवी-देवताओं को ही देख लीजिए-श्रीकृष्ण, भगवान शिव, और भगवान विष्णु इन सभी का रूप व्यवहार, और खान-पान अलग-अलग है। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिल कुमार जैन ने की। डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. अर्चना वर्मा ने ...

छात्र-छात्राओं को मिलेंगी सुविधाएं

अब नहीं जाना पड़ेगा दूसरे शहर, जॉब ओरिएंटेड कोर्स में मिलेगा एडमिशन

मई के पहले सप्ताह में आएगा बोर्ड परीक्षा का रिजल्ट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. 10 वीं व 12 वीं बोर्ड परीक्षा का मूल्यांकन पूरा होने के बाद अब छात्र-छात्राओं को रिजल्ट का इंतजार है। मई में पहले सप्ताह में परिणाम घोषित हो जाएंगे। 12 वीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले ...

इन पाठ्यक्रमों की है शहर में सुविधा

■ डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी विवेक जयसवाल ने बताया कि विवि में 20 अंडर ग्रेजुएट के सब्जेक्ट हैं। 50 पोस्ट ग्रेजुएशन के विषय हैं, तो वहीं 38 से ज्यादा विषयों पर पीएचडी की जा रही है।

... चाह रहे हैं, उनके लिए अब 4 वर्षीय कोर्स संचालित किया जा रहा है। इसके लिए एआई से संबंधित कोर्स भी शुरू हुए हैं।

■ राजकीय रानी अवंतीबाई विवि में भी कई कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। पारंपरिक कोर्स के साथ रोजगार परक कोर्स भी संचालित हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में जैविक खेती, ...

■ शहर के प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस ...

विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य में लाईब्रेरी वेब पेज ऐप विषय पर डिजाइनिंग प्रतियोगिता का आयोजन

जनचिंगारी

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग ने विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस के उपलक्ष्य में %लाईब्रेरी वेब पेज ऐप% विषय पर डिजाइनिंग प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया। प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्रों को लाईब्रेरी वेब पेज या मोबाइल एप्लिकेशन के लिए अभिनव, उपयोगकर्ता केन्द्रित इंटरफेस डिजाइन करने के लिए आमंत्रित करके उनमें रचनात्मकता को बढ़ावा देना और कोडिंग दक्षता को बढ़ाना था। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के संरक्षण में किया गया। यह प्रतियोगिता विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के लिए आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में कम्प्यूटर साइंस एवं एप्लीकेशन, आई.ओ.ई.टी. इंजीनियरिंग, लॉ विभाग के विभिन्न प्रतिभागियों ने लाईब्रेरी प्रबंधन प्रणालियों के संदर्भ में पहुँच, उपयोगकर्ता अनुभव और तकनीकी उन्नति पर केन्द्रित इंटरैक्टिव डिजाइन ले-आउट, अभिनव फीचर प्रस्तावों और प्रस्तुतियों के माध्यम से उत्साहपूर्वक अपने विचारों का प्रदर्शन किया।

लाईब्रेरी वेब पेज ऐप विषय पर डिजाइनिंग प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग ने विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस के उपलक्ष्य में लाईब्रेरी वेब पेज ऐप विषय पर डिजाइनिंग प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया। ...

'खेलों से ही शारीरिक, मानसिक एवं संपूर्ण व्यक्तित्व विकास संभव है'

सागर: डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के तत्वावधान में छात्र-छात्राओं के लिए इंट्राम्यूरल टेबल टेनिस प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। ... इस कार्यक्रम की अध्यक्षता ... शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. विवेक बी साठे ने की। ... पहले राउंड में सुभाष हाउस की ...

मैच के दौरान शाट मारते हुए खिलाड़ी।

राउंड में सुभाष हाउस ने जीत अर्जित कर बढ़त बना ली है। अगले शुक्रवार को दूसरे राउंड के मैच खेले जाएंगे। आज हुए मैचों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी मेधा सौर, मोनेन्द्र एवं आदित्य सिंह राजपूत का सम्मान निदेशक शारीरिक शिक्षा विभाग डॉ. विवेक बी साठे द्वारा किया गया। मैच के निर्णायक विनय शुक्ला, उन्नति सेन, नरेंद्र ... अनवर खान, विनय शुक्ला, मनोज जैन, रंजन मोहती, दीपक दुबे उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन ...

खिलाड़ियों से परिचय लेते हुए अतिथि।

बीपीईएस की छात्रा मुस्कान जड़िया ने किया एवं आभार इंट्राम्यूरल के सह सचिव शतायु लोधी ने माना।

विवि में सकोरा अभियान चलाया, पक्षियों के साथ पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

पत्रिका पक्षी मित्र अभियान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय परिसर में पक्षी मित्र सकोरा अभियान का आयोजन ... गया। ...

... डेवलपमेंट ने आयोजित किया। अभियान के तहत विवि के सभी विभागों में सकोरा लगाए गए और नियमित पानी ...

लाइब्रेरी वेब पेज ऐप पर डिजाइनिंग प्रतियोगिता आयोजित

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर ...विद्यालय के कम्प्यूटर विज्ञान एवं ... विभाग ने विश्व पुस्तक एवं ... के उपलक्ष्य में लाईब्रेरी ... पर डिजाइनिंग ... किया। ... को

कोडिंग दक्षता को बढ़ाना था। यह प्रतियोगिता विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के लिए आयोजित की गई थी। प्रतियोगिता में कम्प्यूटर साइंस एवं एप्लीकेशन, आईओईटी इंजीनियरिंग, लॉ विभाग के विभिन्न प्रतिभागियों ने लाइब्रेरी प्रबंधन प्रणालियों के संदर्भ में पहुंचकर ...योगकर्ता अनुभव और तकनीकी ... केन्द्रित इंटरैक्टिव डिजाइन ... फीचर प्रस्तावों और ... से अपने विचारों का प्रदर्शन किया। प्रविष्टियों का मूल्यांकन रचनात्मकता, उपयोगिता और तकनीकी अंतर्दृष्टि जैसे मापदण्डों पर किया गया।

निर्णायक मंडल में डॉ.मोहन टीए लाईब्रेरियन, डॉ.अनुराग श्रीवास्तव डिप्टी लाईब्रेरियन और डॉ.अभिषेक बंसल विभागाध्यक्ष कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग शामिल रहे। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए और उनके अभिनव योगदान के लिए उनकी सराहना की गई।

भारतीय मन, मानस और संस्कृति का पुनर्बोध विषय पर अकादमिक मंथन

आचरण संवाददाता

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के अभिमंच सभागार में चल रहे श्री धर्मपाल स्मृति द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी जो धर्मपाल शोधपीठ, स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, भोपाल द्वारा प्रायोजित था। उसके विभिन्न तकनीकी सत्रों में अनेक विषयों पर आमंत्रित विद्वानों ने अपने वक्तव्य दिये. इनमें प्रमुख थे प्रो. नन्दकिशोर आचार्य, प्रो. विजय बहादुर सिंह, कुमार प्रशांत, रघु ठाकुर, मनोज कुमार श्रीवास्तव, प्रो. कन्हैया त्रिपाठी, प्रो. सत्यकेतु सांकृत, प्रो. ए.पी. मिश्रा, प्रो. बी.के. श्रीवास्तव, डॉ. मिथलेश शरण चौबे व डॉ. मिथलेश कुमार आदि।

समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने कहा कि जब हम महात्मा गांधी को याद करते हैं और किसी अच्छे विषय पर, विशेषकर स्वराज पर चर्चा करते हैं, तो हमें उनकी प्रसिद्ध पुस्तक हिंद स्वराज याद आती है. यह पुस्तक संभवतः दुनिया की सबसे छोटी, लेकिन अत्यंत प्रभावशाली पुस्तकों में से एक है। इसमें गांधीजी ने अपने अनुभवों को संवाद के रूप में प्रस्तुत किया है। गांधीजी ने बताया कि अगर हम समय की सही समझ नहीं रखते, तो स्वराज संभव नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि केवल अंग्रेजों के हटने से स्वराज नहीं मिलेगा, बल्कि हमें अंग्रेजियत (अर्थात उनकी सोच और जीवनशैली) को भी छोड़ना होगा. गांधीजी ने अपने विचारों में बदलाव लाते हुए यह भी माना कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति ही हमारे संविधान में स्वराज की सच्ची परिभाषा हो सकती है।

प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि हमारे देश में भोजन, स्वाद और संस्कृति में विविधता है. यही विविधता हमारे समाज की खूबसूरती है. हमारे देवी-देवताओं को ही देख लीजिए-श्रीकृष्ण, भगवान शिव, और भगवान विष्णु इन सभी का रूप व्यवहार, और खान-पान अलग-अलग है. हमारी असली ताकत हमारी विविधता में निहित एकता है।

प्रो. कुमार प्रशांत ने कहा कि तकनीकी एक उपकरण है, जिसका इस्तेमाल हम अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए करते हैं, लेकिन यह समझना जरूरी है कि तकनीक अपने आप में अंतिम सत्य नहीं है।

वक्ता डॉ. मिथिलेश ने कहा कि आज जो ज्ञान हमारे पास पहुँच रहा है, वह अधिकांशतः पश्चिमी दृष्टिकोण से प्रभावित है।

डॉ कन्हैया त्रिपाठी ने कहा कि यदि हम आज भी नई सोच नहीं अपनाते, तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि हम आज भी औपनिवेशिक सोच की छाया में जी रहे हैं. उपनिवेशवाद केवल राजनीतिक नियंत्रण नहीं था, बल्कि यह एक मानसिकता थोपने की प्रक्रिया थी।

प्रो. सत्यकेतु सांकृत ने कहा कि जब हम उपनिवेशीकरण की बात करते हैं, तो यह केवल भूमि पर नियंत्रण तक सीमित नहीं था, बल्कि यह हमारी सोच, संस्कृति, शिक्षा, और पहचान पर गहरी चोट करने की एक प्रक्रिया थी।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिल कुमार जैन, अधिष्ठाता, शैक्षिक अध्ययनशाला, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा की गयी। इस सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. सुस्मिता लाख्यानी, अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने बनाए चित्रों के माध्यम से सारस्वत वक्तव्य दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. मनीष वर्मा, संयुक्त संचालक, लोक शिक्षण संभाग, सागर एवं प्रो. सत्यकेतु सांकृत, अधिष्ठाता, साहित्य अध्ययन केन्द्र बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली ने अपने उद्बोधन दिये. डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया. डॉ. अर्चना वर्मा ने संगोष्ठी प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. डॉ. योगेश कुमार पाल, शिक्षा विभाग द्वारा आभार ज्ञापन किया गया. सत्र का संचालन डॉ. किरण आर्य, सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग द्वारा किया गया।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर
असतो मा सद्गमय

SagarUniversity DoctorGour Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya,Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, जनसंपर्क अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)